चन्दामामा
दिसम्बर १९६४
GD P

दिसम्बर १९६४

★

विषय - सूची



★


एक प्रति ६० पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ७-२०

# अपने बच्चे को सर्दी-ज़ुकाम से पीड़ित न होनें दें

## विक्स वेपोरब तुरन्त आराम पहुंचाता है...
## आपका बच्चा आसानी से सांस ले सकता है...वह रात भर आराम से सो सकता है।

आपके बच्चे की सुख-सुविधा आप पर ही निर्भर है। इस लिए जब आपके बच्चे में सर्दी-ज़ुकाम के आरम्भिक लक्षण दिखायी दें, जैसे नाक का बहना, आंखों से पानी गिरना, गले का बैठ जाना, सांस लेने में तकलीफ, तो विक्स वेपोरब मलिये।

विक्स वेपोरब आपके बच्चे के सर्दी-ज़ुकाम का सर्वोत्तम इलाज है क्योंकि यह सर्दी से प्रभावित उन सभी भागोंपर, जैसे नाक, छाती और गले में, जहां सर्दी की पीड़ा सबसे ज्यादा होती है, असर करता है और आपके बच्चे की कोमल त्वचा को इससे तनिक भी क्षति नहीं पहुंचती।

बस विक्स वेपोरब मलिये और अपने बच्चे को कम्बल ओढ़ा कर आराम से बिस्तरपर सुला दीजिये। विक्स वेपोरब अपना काम करता रहेगा। जबकि आपका बच्चा रात भर चैन की नींद सोता रहेगा। सुबह तक सर्दी-ज़ुकाम की पीड़ा जाती रहेगी और आपका लाडला मुन्ना स्वस्थ और हंसता-खेलता उठेगा।

# विक्स वेपोरब

३ साइज़ में

मधुर स्वाद का तोहफा 'सही अंश' में भुनी

## पोलसन की कॉफी

संतोष-जनक ढंग से भुनी हुई

पोलसन - मक्खन, घी, आटा और चाय का भी घरेलू नाम

भेंट के लिए कूपन इकट्ठे कीजिये — पोलसन लिमिटेड – बम्बई • आणंद • पटना

PL 1137 A HIN EA

# नौनिहाल

बच्चों को स्वस्थ रखता है

एक चम्मच नौनिहाल आप के बच्चे को ढेर सारा स्वास्थ्य देकर उसे चुस्त और प्रफुल्ल रखता है। आप सदा अपने बच्चे को नौनिहाल ग्राइप सिरप और नौनिहाल० बेबी टॉनिक दीजिये। आप का बच्चा दिन रात चौबिसों घंटे स्वस्थ और प्रसन्न रहेगा।

दिल्ली - कानपुर - पटना

HDN 135 D HIN

LIFEBUOY
for health
अब
एक नई
शान के साथ!
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन
L. 47-77 HI
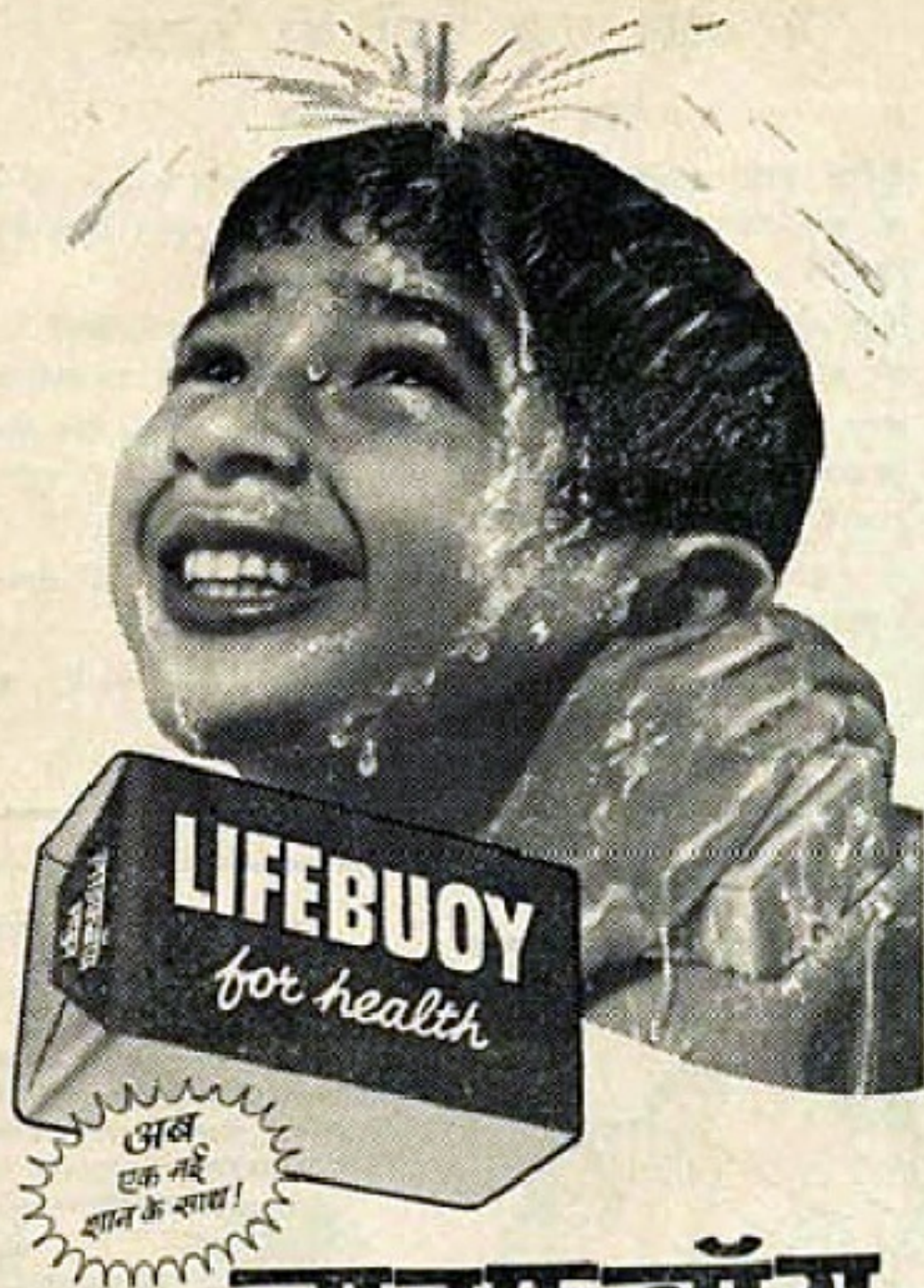
# मेरे देखे कुछ देशों की झलक

लेखक : सी. सुब्रह्मण्यम्

आप यूरोप जाना चाहते हैं? यदि हाँ, तो एक ऐसे यात्री के अनुभव भी पढ़िये जो अभी अभी यूरोप से लौटे हैं और जो अपने अनुभव सुन्दर रोचक शैली में लिखते हैं। उनका अनुभव आप के लिए मार्गदर्शी होगा।

क्या आप यूरोप गये हैं? यदि हाँ, तो सम्भव है कि आप अपने अनुभव श्री. सी. सुब्रह्मण्यम् के अनुभवों से मिलाने चाहें और नया आनन्द प्राप्त करना चाहें।

क्या आप यूरोप जा पायेंगे? शायद नहीं, मुद्रा विनमय का कुछ ऐसा झमेला है कि जाना आसान नहीं है। यह पुस्तक पढ़िये और घर बैठे बैठे ही यूरोप की यात्रा का आनन्द पाइये।

यात्रा वृत्तान्त की असाधारण पुस्तक असाधारण लेखक श्री. सुब्रह्मण्यम् "चन्दामामा" प्रकाशन की प्रथम हिन्दी भेंट।

मूल्य : १ रु. ५० पै. — रजिस्टर डाक खर्च : १ रु. १५ पै. अलग

प्राप्ति स्थल : चन्दामामा प्रकाशन, वडपलनी, मद्रास-२६

---

# अल्बो-सांग

## सभी उम्र के लिए एक आदर्श टॉनिक

पूर्ण स्वस्थ रहने के लिए आपको अल्बो-सांग की ज़रूरत पड़ेगी। क्यों कि अल्बो-सांग में ऐसे विशेष तत्व होते हैं जो बूढ़ों और बच्चों के शरीर को स्वस्थ बनाते हैं। अल्बो-सांग आज ही लीजिये, हर रोज़ लीजिये और आप हमेशा स्वस्थ बने रहेंगे।

जे. एण्ड जे. डीशेन
हैदराबाद (आं. प्र.)

• करारे
• स्वादिष्ट
• पौष्टिक

# सारे परिवार के स्वास्थ्य के लिये फॉसफोमिन

फॉस्फोमिन विटामिन बी काम्प्लेक्स तथा मस्तिष्क ग्लिसरोफास्फेट से युक्त एक उत्कृष्ट टॉनिक है जो आपके परिवारको बलवान युवा और स्वस्थ रखेगा। फॉस्फोमिन के सेवनसे थकावट और कमजोरी का नामोनिशान नहीं रहेगा। फॉस्फोमिन थकावटको मिटाता है। भूख बढ़ाता है। आन्तरिक बल बढ़ाता है। शरीर को बलवान बनाता है। हर एक के स्वादवाले विटामिन टॉनिक... फॉस्फोमिन से आपके सारे परिवारका स्वास्थ्य बना रहेगा।

चन्दामामा
संचालक : चक्रपाणी
हमारे कई पाठक लिखते हैं कि हम हर मुख्य त्यौहार पर "चन्दामामा" का विशेष अंक निकालें।
सुझाव तो अच्छा है। काश, हम इस सुझाव का अमल कर सकते। पर यह वर्तमान परिस्थितियों में न सम्भव है, न व्यावहारिक ही। फिर भी हम उन सब पाठकों को शुभ कामनायें भेजते हैं, जो इस मास क्रिसमस मना रहे हैं।
वर्ष : १६ दिसम्बर १९६४ अंक : ४
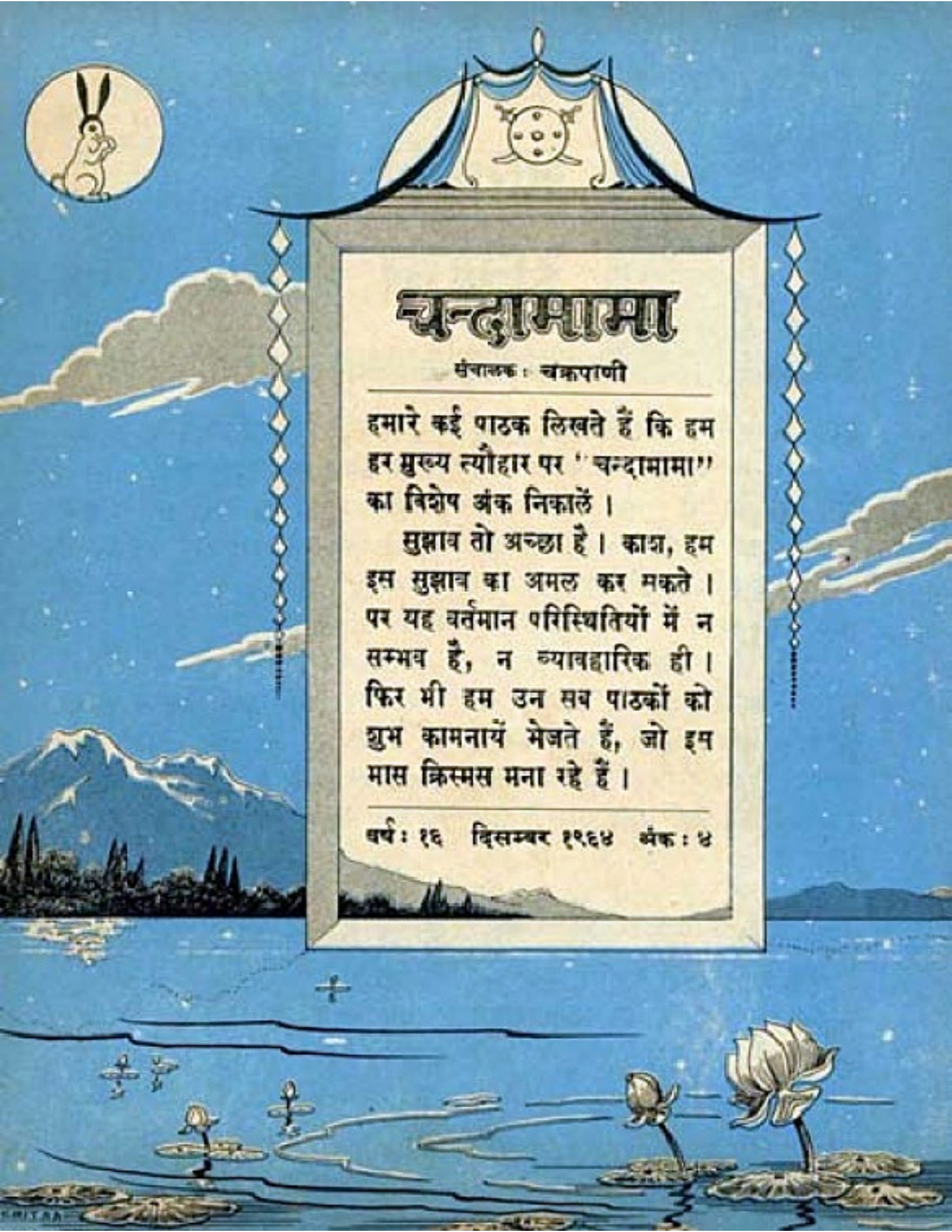
# भारत का इतिहास

बाबर के मरने के तीन दिन बाद हुमायूँ गद्दी पर बैठा। तब उसकी उम्र तेईस वर्ष की थी। तब परिस्थितियाँ उसके अनुकूल न थीं। चारों ओर वह अदृश्य दुष्ट शक्तियों से घिरा हुआ था। उसके अपने घर में ही फूट-सी थी।

हुमायूँ के भाइयों की (कामरान, हिन्दाल, अस्करी) तो गद्दी पर नज़र थी ही, साथ उसके सम्बन्धी मुहम्मद जमान, मुहम्मद सुल्तान भी गद्दी हड़पना चाहते थे। वे इसके लिए लड़ने तक के लिए तैय्यार थे।

दरबार में कई अमीर भी गद्दी की फ़िराक में थे।

सेना में भी एकता न थी। उनमें कई जातियों के लोग थे और उनमें आपसी दुश्मनी थी। इसलिए हुमायूँ न अपने बन्धुओं पर, न ही कर्मचारियों पर, न सेना पर ही विश्वास कर सकता था।

साम्राज्य नया था, अभी स्थिर न हुआ था, जो बाबर से हरा दिये गये थे, वे नेस्तानाबूद नहीं हुए थे। राजपूतों की पराजय क्षणिक थी।

अफ़गान हार तो गये थे, पर अभी ने थे और बिखरे हुए अफ़गान बगावत की तैयारी कर रहे थे। उनका ठीक सरदार ही कोई न था। (शेर शाह ने यह कमी भी पूरी कर दी।

एक और बात यह भी थी कि गुजरात के शासक ने अपनी शक्ति इतनी बढ़ा ली थी कि वह हुमायूँ का प्रतिद्वन्दी हो गया था।

इस स्थिति में हुमायूँ के लिए युद्ध तन्त्र का ज्ञान, राजनीति का ज्ञान और

शासन कुशलता अत्यन्त आवश्यक थी। और उसमें ये तीनों ही नहीं थे।

उसमें अच्छी अभिरुचियाँ थीं, संस्कार भी थे। पिता की कार्यदीक्षा और परिश्रम नहीं थे, थोड़ी-सी विजय मिलती, अफ़ीम खाकर जनाना में घुस जाता और ख्वाब देखता, इस तरह शत्रु को आने का मौका दे देता, जिनको सख्त सज़ा देनी थी, उनको तरस खाकर माफ़ कर देता। जब उसे घोड़े पर होना चाहिए था, तब वह दावत खा रहा होता। "हुमायूँ" का अर्थ "सौभाग्यशाली" है, वह उसके लिए सार्थक निकला।

उन भाइयों को, जिनकी नज़र गद्दी पर थी—उनको अपने वश में न रखकर, परगणा दे दिये। अस्करी को सम्भल, बड़े छोटे भाई को कामान को काबुल और कन्धार दिये। इसी कामान ने लाहौर में हुमायूँ के सेनापति को डराकर, पंजाब और उसके पूर्व भाग हिसार को भी हथिया लिया।

इस प्रकार हुमायूँ ने पिता के दिये हुए साम्राज्य के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। सिन्धु और पार के प्रान्त से अच्छी सेना जुटायी जा सकती थी और वे कामान आधीन आ गये थे। हिसार भी चूँकि उसके हाथ में था इसलिए दिल्ली का "राज मार्ग" भी उसके हाथ आ गया था।

परन्तु शुरु शुरु के युद्ध में हुमायूँ को ही विजय मिली। इस सन्देह से कि बुन्देल खण्ड का राजा, अफ़गानों का समर्थक था, हुमायूँ ने गद्दी पर आने के पाँच-छः महीने बाद, उस पर आक्रमण किया। परन्तु अफ़गानों का बल पूर्व में इतना बढ़ गया था कि हुमायूँ को कालिंजर

के राजा से हरजाना लेकर, वापिस आ जाना पड़ा। दौरा के पास उसने अफ़गानों को जीता, जौनपुर के पास उसने सुल्तान मोहम्मद को हराया। अफ़गान योद्धा शेरखान के आधीन चुनार को हुमायूँ ने घेर लिया। पर वहाँ बगावत को बिना खतम किये ही शेरखान के नाम मात्र समझौते के कारण, उसने घेरा उठा दिया। उस कारण, जब हुमायूँ पश्चिम में गुजरात के शासक बहादुर शा से लड़ रहा था, शेरखान अपनी शक्ति को अच्छी तरह संगठित कर सका।

बहादुर शा पर आक्रमण करने के लिए हुमायूँ के पास आवश्यक कारण थे। उसके कई प्रबल शत्रु अफ़गानों को बहादुर शा ने शरण दे रखी थी। मेवाड़ साम्राज्य को क्षीण अवस्था में पाकर, उसने उसको ले लिया था। हुमायूँ ने अफ़गानों पर जो विजय पायी थी—उसे यूँहि छोड़ कर, जब वह १५३४ माल्वा में युद्ध करने के लिए गया, तो तब तक बहादुर शा ने, जो पहिले ही माल्वा को अपने राज्य में मिला चुका था, चित्तौड़ को घेरे हुए था।

मेवाड़ की रानी कर्णावती ने, जो बहादुर शा से लड़ रही थी, हुमायूँ की मदद माँगी। हुमायूँ ने उनको मदद तो दी नहीं और अपने स्वार्थ के लिए भी तुरत बहादुर शा को रोका नहीं। बहादुर शा जब तुर्की इन्जनीयरों की मदद से पाश्चात्य तोपों से राजपूतों को हराकर, चित्तौड़ के किले को मिट्टी में मिला रहा था, तो मुगल बादशाह हाथ पर हाथ रखे उसे देखता रहा।

# नेहरू की कथा

[५]

१९०७ ओक्टोबर में जब जवाहरलाल नेहरू अट्ठारह वर्ष के हो गये थे वे केम्ब्रिज विश्व-विद्यालय में प्रविष्ट हुए। उन दिनों वह विश्व-विद्यालय प्रकृति शास्त्र के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध था।

जवाहर ने वहाँ रसायन, भौतिकी और वनस्पति-शास्त्र पढ़ने के लिए लिये। परन्तु इतिहास और साहित्य में उनकी अभिरुचि कम नहीं हुई।

जवाहरलाल ने विश्वविद्यालय में तीन वर्ष बिताये। वहाँ उनके सहपाठियों में कुछ ऐसे भी लोग थे, जिन्होंने बाद में राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लिया। उनमें मुख्य थे जे. एम. सेनगुप्त। नेहरू के मन्त्री-मण्डल के सदस्य, सैय्यद महमूद, अहमदखान शेरवानी, सैफ़ुद्दीन किचलू, ये सब नेहरू के सहपाठी थे। श्री प्रकाश (मद्रास और महाराष्ट्र के भूतपूर्व राज्यपाल) जवाहरलाल के केम्ब्रिज छोड़ने के एक साल बाद केम्ब्रिज में प्रविष्ट हुए।

ये बाद में अच्छे मित्र बने। पर उनका प्रथम मिलन इस प्रकार हुआ था। १९११ दिसम्बर में लन्दन में एक भारतीय के घर श्री प्रकाशजी ने पहिली बार जवाहर को देखा। जवाहर पाश्चात्य पोषाक में, बैठक में आये। आग सेकते, खड़े खड़े उन्होंने बहुत-से विषयों के बारे में बात की। कुछ देर बाद उन्होंने कहा कि उन्हें भूख लग रही थी। भोजन माँगकर उन्होंने खा लिया।

थोड़ी देर बाद, श्री प्रकाशजी के साथ जवाहर घर की ओर निकले। बस और

"ट्यूब" रेल, सब बन्द हो चुकी थीं। टेक्सी मिलना आसान न था।

"कैसे घर जाओगे!" श्री प्रकाश जी ने जवाहर जी से पूछा। श्री प्रकाश जी का मकान पास था। परन्तु नेहरू जी का काफ़ी दूर था।

"मेरे बारे में फ़िक्र न करो। मैं अपनी बात खुद सोच लूँगा।" कहते जवाहर अन्धेरे में ही चल पड़े।

उसको देखकर परिचित भी कई तरह की बातें सोचते थे, क्योंकि वे किसी से दिल खोलकर बातें नहीं करते थे। परन्तु वास्तविक मित्रों से वे खुलकर बातें किया करते, आत्मीयता दिखाते। जवाहर के निकट के मित्रों में डॉ. खान साहब थे। ये "सरहद गान्धी" अब्दुल गफ्फार खान के भाई थे। उन दिनों खान साहेब लँडन में सेन्ट थामस हास्पिटल में विद्यार्थी थे। जवाहर प्रायः प्रति दिन उनसे मिलते। खान साहब कभी कभी जवाहर को अपनी पीठ पर चढ़ाकर नाचा भी करते।

इस प्रकार छोटे बच्चों की तरह खेलने कूदने का जोश, जवाहरलाल नेहरू में, बुढ़ापे में भी था। वे अपने पोतों के साथ शोर शराबा करते, तीन पहिये की साईकल भी चलाते।

जवाहर जब केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में थे, तो उनकी छाप, न तो वहाँ के जीवन पर, न विश्वविद्यालय में पढ़नेवाले करीब सौ भारतीय विद्यार्थियों पर ही पड़ी। उनमें से कई को यह भी याद न रहा कि उन्होंने कभी जवाहरलाल नेहरू को देखा भी था।

केम्ब्रिज में भारतीय विद्यार्थियों की एक विशेष संस्था, मजलिस थी। जवाहर उसमें

प्राय: आया करते। वहाँ हर हफ्ताह किसी न किसी बात पर चर्चा होती। अक्सर भारत की राजनीतिक परिस्थिति पर ही बातें होतीं।

जवाहरलालजी यूँहि शर्मीले थे, फिर मजलिस में विषय की अपेक्षा, बोलने की शैली को अधिक महत्ता दी जाती थी। इसलिए जवाहर वह सब देख चिढ़ से जाते।

वे अपने कालेज की डिबेटिंग सोसाईटी में भी शायद इसी कारण कोई हिस्सा न लेते थे।

उन दिनों यह नियम था कि यदि कोई विद्यार्थी, एक टर्म मे एक बार भी न बोलता, तो उसे जुरमाना देना पड़ता था। जवाहर प्राय: वह जुरमाना दे दिया करते थे।

केम्ब्रिज विश्व-विद्यालय देखने भारत से कई मुख्य व्यक्ति आया करते थे। उनमें कुछ राजनैतिक नेता भी होते थे।

एक बार बेन्गाल से विपिन चन्द्र पाल आये। सुननेवाले यदि दो-तीन भी होते, तो वे गम्भीर ध्वनि में ज़ोर से गरजते। उन्होंने बारह भारतियों के सामने एक छोटे कमरे में, इस तरह भाषण किया कि जवाहर उनका गर्जन समझ नहीं सके।

जवाहर ने लाला लाजपत राय और गोपालकृष्ण गोखले के भी भाषण सुने। गोखले भारतीय नेताओं में अग्रगण्य थे। अनुदारवादी तिलक के यद्यपि वे पूर्णतः विरुद्ध थे, तो भी वे दूर दृष्टिवाले राजनीतिकों थे। दुर्भाग्यवश, वे अपने उञ्चासवें साल ही, १९१५ फरवरी में गुज़र गये। जवाहर बीस वर्ष की उम्र में, १९१० में, केम्ब्रिज

की शिक्षा समाप्त करके, द्वितीय श्रेणी में ओनर्स में उत्तीर्ण हुए।

इसके बाद क्या किया जाय, जब यह प्रश्न उठा, तो यह भी सुझाया गया कि वे आई-सी-एस की परीक्षा में बैठें।

यदि जवाहर में उन दिनों देश भक्ति जम गई होती, तो आई-सी-एस पास होकर, देश की दासता को दृढ़ करना उनको अखरता। पर उनको ऐसी कोई आपत्ति नहीं हुई। यह उन्होंने अपनी जीवनी में स्वीकार किया है।

जवाहर यदि आई-सी-एस हो जाते, तो न मालूम इतिहास की क्या गति होती और नेहरू जी का जीवन ही क्या होता!

परन्तु उनके आई-सी-एस परीक्षा छोड़ने के दो मुख्य कारण थे। एक यह कि आई-सी-एस में बैठने के लिए कम से कम बाईस वर्ष का होना ज़रूरी था। यानि उस हालत में तीन साल और जवाहर को अपने माँ बाप से दूर रहना होता। दूसरा यह कि यदि वे आई-सी-एस पास हो जाते, तो अंग्रेज उनको देश के किसी कोने में भी नौकरी दे सकते थे। नौकरी की बदौलत उनको आत्मीयों से दूर रहना पड़ता।

इसलिए आखिर जवाहर ने अपने पिता की वृत्ति करने का ही निर्णय किया। जवाहर केम्ब्रिज से आकर लन्डन में रहने लगे, "ला" की परीक्षायें एक एक करके "साधारण" श्रेणी में पास होते रहे।

[अभी है]
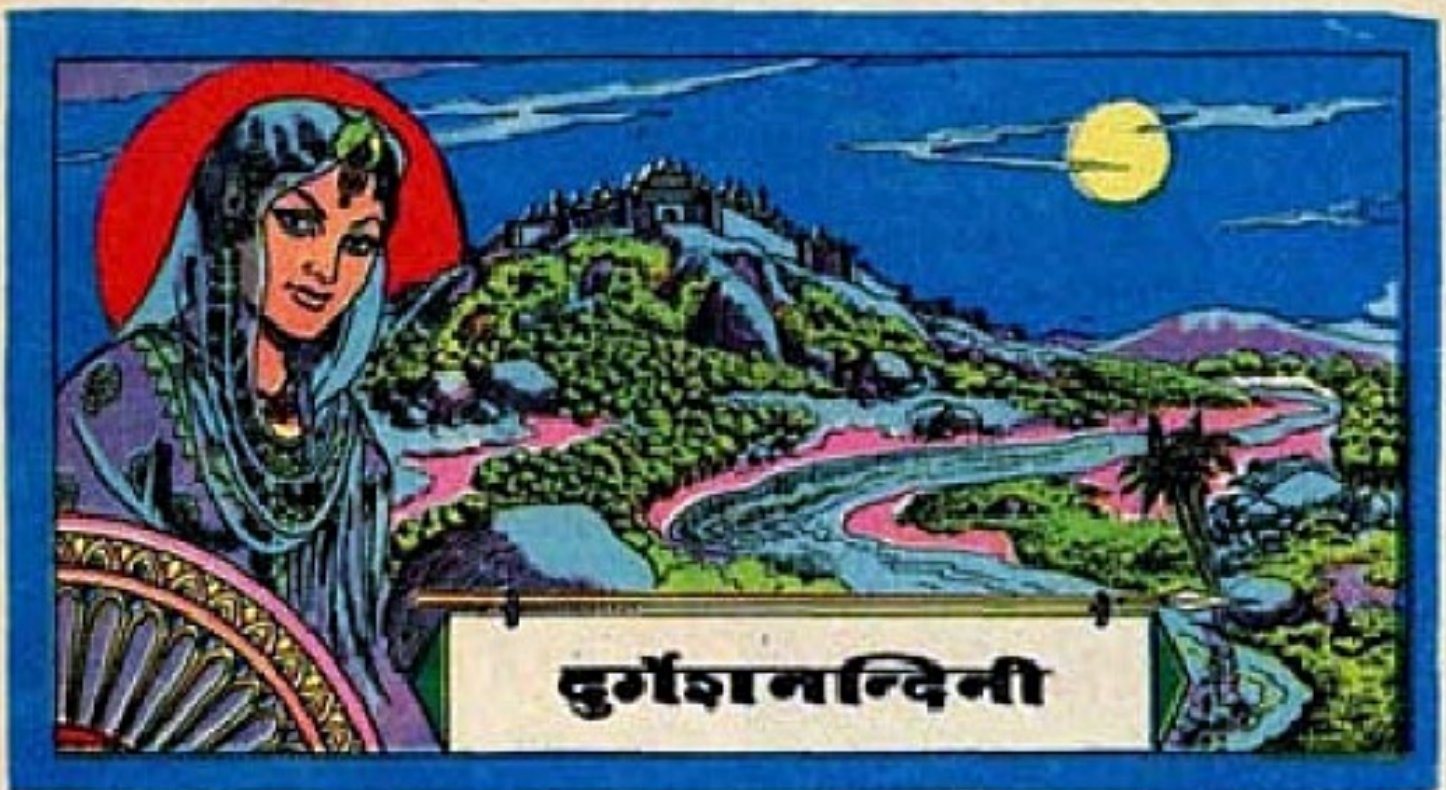
[ ६ ]

[ विमला ने, जिसने वचन दिया था कि वह अपनी सहेली के बारे में सब कुछ बता देगी, निश्चित दिन की रात को शैलेश्वर मन्दिर में आयी। जगतसिंह को जब यह मालूम हुआ कि तिलोत्तमा वीरेन्द्रसिंह की लड़की थी, तो वह हताश हो गया। एक बार तिलोत्तमा को देखने के लिए, वह विमला के साथ मन्धारण किले में आया। विमला की गलती से एक पठान किले में घुस गया। उस समय......]

जगतसिंह ने विमला के लाये हुए भाले ले लिये, फिर उस ही पेड़ पर चढ़ गया, जिस पर वह पहिले चढ़ा था। तब उसे दूर के पेड़ के झुरमुट में एक ही पगड़ी दिखाई दी, दूसरी नहीं दिखाई दी। उसने उस पगड़ी को निशाना बनाकर, इस ज़ोर से भाला फेंका कि पगड़ीवाला तुरत नीचे गिर गया।

जगतसिंह झट उतरकर उस व्यक्ति के पास आया। उसने एक सशस्त्र सैनिक की तरह दीखनेवाले एक मुसलमान को मरा देखा। भाला उसकी आँखों में से दिमाग में घुस गया था।

उसके कवच में से एक कागज़, बाहर आधा दिखाई दे रहा था, जगतसिंह ने उसे देखा।

श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

उसने चान्दनी में, उस कागज में यूँ पढ़ा—"इस पत्रवाहक की आज्ञाओं का पालन कतलुखान के अनुयायी करें।"

विमला इन बातों को बिल्कुल न जानती थी। उसने युवराज के पास आकर कहा—"शहर ठहरना ठीक नहीं है, चलिये, किले में चलें। मैं गलती से गुप्त द्वार बिना बन्द किये ही चली आयी हूँ। चलिये।"

दोनों डरते डरते किले में गये। विमला ने गुप्त द्वार को बन्द कर दिया। वह उसे एक शयनागार में ले गई। "मैं अभी आती हूँ, आप जाकर बिस्तरे पर आराम कीजिए।"

फिर उसने वापिस आकर कहा—"युवराज, एक बात है।" युवराज घबराता घबराता, विमला के साथ अन्तःपुर के एक कमरे में गया। तुरत विमला वहाँ से चली गई।

कमरे में सुगन्धी आ रही थी। दीया जल रहा था। वहाँ एक नवयुवती सिर झुका कर बैठी थी। वह तिलोत्तमा ही थी।

विमला युवराज को कमरे में पहुँचाकर, अपने कमरे में चली गई। उसके मुँह पर खुशी ही खुशी थी, क्योंकि उसकी इच्छा आज पूरी हो गई थी। वह आईने के सामने अपने सौन्दर्य को देखकर, फूली न समाई। फिर वह पलँग पर बैठकर, जगतसिंह की प्रतीक्षा करने लगी।

इतने में बगीचे में हो हल्ला हुआ। वह चौंकी। भेरि बाद्य मुख्य द्वार से सुनाई पड़ने चाहिए थे। ये पिछवाड़े से क्यों सुनाई दे रहे हैं! जरूर दाल में कुछ काला है, वह घबराई गई। वह खिड़की

के पास गई, चारों ओर देखा, पर कहीं कुछ नहीं दिखाई दिया।

बिमला अपने कमरे से बाहर आयी, गुप्त द्वार से, सीढ़ियों पर से, छत पर गयी, चारों ओर नज़र दौड़ाई। परन्तु घने अन्धकार में कुछ नहीं दिखाई दिया।

वह मुँडेर के एक कोने में जाकर, वापिस आ रही थी कि उसको लगा कि किसी ने उसके पीठ पर अंगुली रखी हो। जब उसने मुड़कर देखा, तो एक अपरिचित सशस्त्र व्यक्ति दिखाई दिया—बिमला को काठ-सा मार गया।

"चिल्लाओ मत ! सुन्दरियों को चिल्लाना शोभा नहीं देता।" उस आदमी ने कहा।

बिमला ने उसको सिर से ऐड़ी तक देखा और जान गयी कि वह मामूली सैनिक नहीं था। चतुर बिमला कुछ देर तक ही चकरायी। फिर सम्भलकर, उसने उस व्यक्ति से पूछा—"तुम कौन हो ! यहाँ क्यों हो !"

"मुझे जानने से तेरा क्या फ़ायदा !" उसने उससे पूछा।

"पठान! इस गुलाम का नाम उस्मान खान है, पहिचाना नहीं! और भी बताना होगा! मैं कतलखान का सेनापति हूँ।" पठान ने कहा।

विमला काँप-सी गई। वह सोचने लगी कि युवराज को कैसे यह खबर पहुँचाई जाये। उसे इसके लिए कोई रास्ता नहीं दिखाई दिया। उस हालत में उसने सोचा कि जब तक सम्भव हो, उस पठान को वहीं रोका जाये।

इतने में किले का कोई सैनिक वहाँ आ सकता था। परिस्थिति जानकर आवश्यक कार्य कर सकता था। उसने उस्मान खान को बातों में उतारा।

उस्मान खान आखिर जान गया कि वह जैसे भी हो, उसको छत पर रोकने का प्रयत्न कर रही थी। उसने कहा—"जो तुम्हारे आँचल में तालियों का गुच्छा बँधा है, वह मुझे दे दो। तुम्हारे शरीर पर हाथ रखकर मैं तुम्हारा मान भंग नहीं करना चाहता।"

विमला जान गई कि अब उसकी चाल नहीं चल रही थी। जो जबर्दस्ती तालियाँ छीन सकता है, अगर वह इस तरह

"तुम किले में कैसे आये! क्या तुम नहीं जानते कि चोरों को फाँसी दे दी जाती है।" विमला ने कहा।

"सुन्दरी, मैं चोर नहीं हूँ।"

"किले में कैसे घुसे!"

"तुम्हारी मेहरबानी की वजह से ही, जब गुप्त द्वार से तुम बाग में गई, तो मेरी खुश किस्मती से तुम द्वार छोड़कर चली गई थी, मैं उस समय अन्दर चला आया। अब छत पर तुम्हारा पीछा करता आया हूँ।"

"फिर भी तुम हो कौन!"

बात करे, तो वह मजाक नहीं तो और क्या है!

उसने आँचल को अपने हाथ में रखते हुए कहा—"यदि मैं स्वयं ताल्यिां न दूँ, तो तुम कैसे लोगे!"

"यदि सीधी तरह न दी, तो छूना पड़ेगा।" उस्मान खान ने कहा।

"ले लीजिये।" कहकर उसने अपना आंचल बाग में फेंका, उस्मान खान ने उसे पकड़ लिया। उसने उसमें से ताल्यिों का गुच्छा ले लिया, उसे अँटी में दबाकर उस आँचल से विमला को ज़ोर से बाँध दिया, फिर सीढ़ियों पर से झट उतरकर चला गया।

विमला जोर से चिल्लाई, पर किसी ने उसका चिल्लाना नहीं सुना।

नीचे उस्मान खान पहिले विमला के कमरे में गया। ताल्यिों से गुप्त द्वार खोला, खुले द्वार से एक एक करके कई सैनिक अन्दर आये।

आखिर उसने कहा—"बस, इतने काफ़ी हैं, बाकी बाहर ही रहें, मेरे इशारा करते ही, किले पर हमला कर दो। यह बात ताय खान को बताओ।"

उस्मान के साथ सैनिक अन्दर आये। वह एक सैनिक को छत पर ले गया, विमला को उसे दिखाकर कहा—"यह बहुत चलती हुई है। इसका बिल्कुल विश्वास न करना, रहीम शेख मैं तुम्हें इस पर पहरा देने के लिए छोड़ रहा हूँ। यदि यह चिल्लाये या भागने की कोशिश करे, तो इसे मार दो, यह सोच लिहाज न करना कि यह औरत है, समझे!"

"जो हुआ" रहीम शेख विमला पर पहरा देने लगा।

उस्मान खान के जाते ही बिमला का ढाढस बँधा। उसे भरोसा हो गया कि कोई चाल चलकर छुटकारा पाया जा सकता था।

वह उस पहरेदार से बातें करने लगी। एक सुन्दर स्त्री, उसके सुख दुःख के बारे में, घर गृहस्थी के बारे में पूछे तो एक साधारण सैनिक का दिल अगर पिघल जाये, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है!

रहीम शेख बिमला की चाल में आ गया। यह देख बिमला ने उससे यह कहा कि वह बहुत डर रही थी, उसको पास आकर बैठने के लिए कहा। वह आकर बैठ गया।

"शेख जी! आप के माथे पर इतना पसीना क्यों है! मुझे खोल क्यों नहीं देते! मैं पंखा कर दूँगी, फिर मुझे बाँध देना।" बिमला ने कहा।

उसके माथे पर बिल्कुल पसीना नहीं था। फिर भी उससे पंखा करवाने के लिए उसने उसके हाथों पर बँधे आँचल को खोल दिया।

बिमला ने उसी आँचल से, उस पर कुछ देर पंखा किया फिर उसे अपने कन्धे
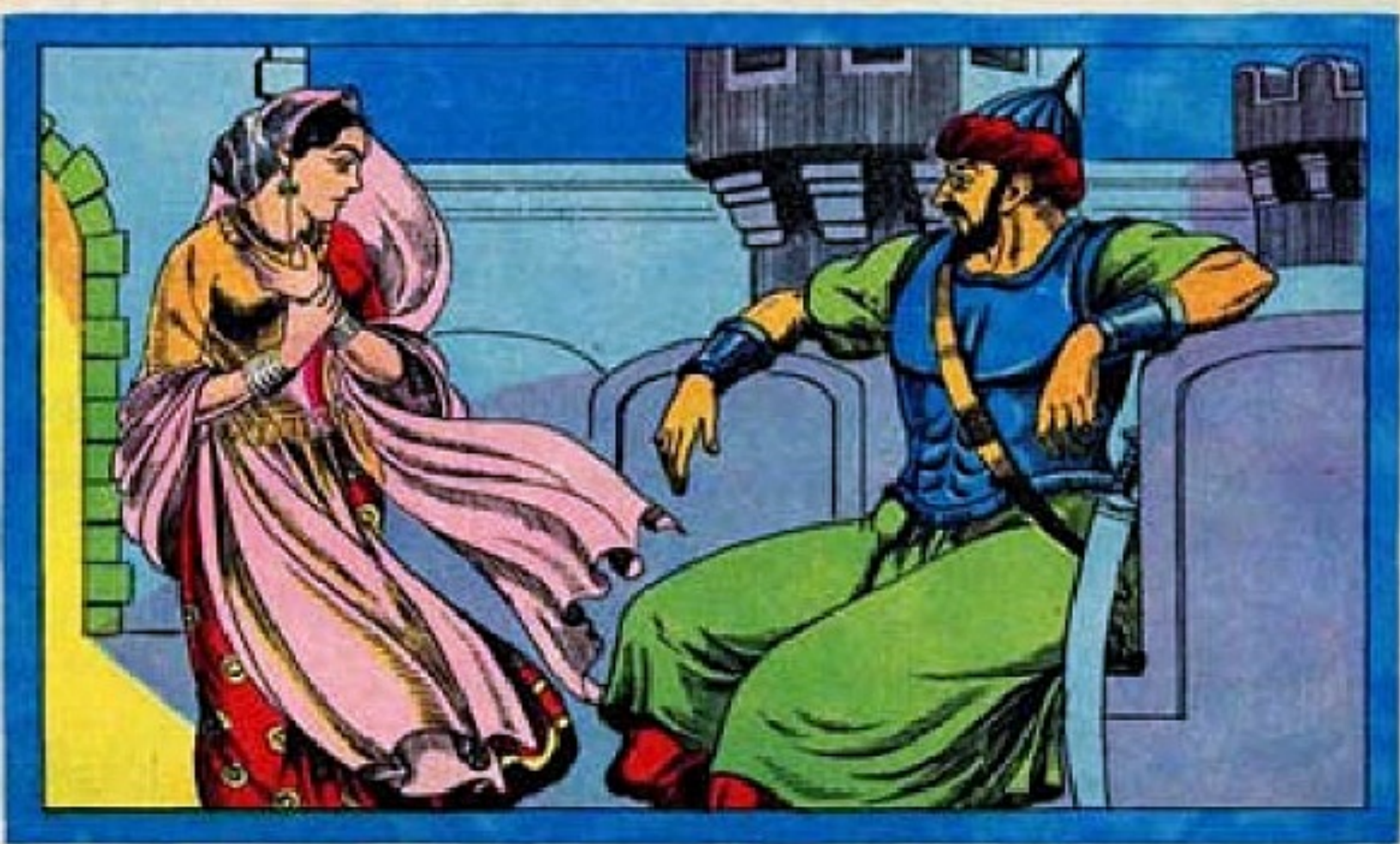
पर डाल लिया। रहीम शेख ने उसको फिर बांध देने की नहीं सोची। आँचल डालने के बाद उसे लगा जैसे उसका सौन्दर्य दुगना हो गया हो।

"शेख जी, क्या आपकी पत्नी को आप पर प्रेम नहीं है!" बिमला ने उसे फुसलाते हुए पूछा।

"क्यों नहीं है!" रहीम शेख ने चकित होकर कहा।

"प्रेम है, तो क्या वे वसन्त में तुम्हें छोड़कर रह सकेंगी!" बिमला ने कहा। बसन्त को गये तीन महीने हो गये थे। परन्तु उस मुर्ख को बिमला के सौन्दर्य में वसन्त सामने ही दिखाई दे रहा था।

उसने उससे यूँ बातें की कि वह सोचने लगा कि बिमला उसके साथ आने के लिए तैय्यार थी।

"यह देखो, जब इस युद्ध में हमें विजय मिल जायेगी, तो मैं तुम्हें अपने साथ जरूर ले आऊँगा, यहाँ सरदार जो तकलीफ़ दे रहा है, मैं उन्हें बर्दाश्त नहीं कर पा रहा हूँ।" रहीम ने कहा। बिमला को दुःखी देखकर, उसने पूछा—"क्या सोच रही हो!"

"क्या सोचने को है! मेरे नसीब में सुख नहीं है। तुम इस किले को नहीं जीत सकते।" विमला ने कहा।

"क्यों!"

"एक रहस्य है।"

"क्या है वह, जल्दी बताओ।"

"जगतसिंह दस हज़ार सैनिकों के साथ इसी प्रान्त में है। यह जान कि तुम आज किले को घेरने जा रहे हो, वह तुमसे पहिले ही आ गया है। वह अभी कुछ नहीं करेगा, जब तुम विजय पाकर, आराम से बैठोगे, तब तुम पर वार करेगा।"

"तो यह बात है!" रहीम ने कहा।

"यह बात, किले का हर आदमी जानता है!" विमला ने कहा।

रहीम ने खुश होकर कहा—"तुम जानती हो, तुमने मेरा उपकार किया है। यदि मैंने यह बात सेनापति से कही, तो वे मुझे बड़ा ईनाम देंगे, मैं अपने सरदार से यह कहने जा रहा हूँ, तब तक तुम यहीं ठहरो।" कहकर, वह जाने लगा।

उसे, विमला पर कुछ भी सन्देह नहीं हुआ।

"क्या तुम आओगे....नहीं, तो बस चले ही जाओगे!" विमला ने पूछा।

"मैं अभी आता हूँ, अभी आऊँगा।"

"यदि तुम मुझे भूल जाओगे, तो जाना ही मत।" विमला ने कहा।

"कभी नहीं भूलूँगा, कभी नहीं भूलूँगा।"

"नहीं आये तो....मेरी कसम खाओ।"

"सन्देह मत कर, ज़रूर आऊँगा।" कहता रहीम शेख भागा।

उसके आँखों से ओझल होते ही विमला अपने रास्ते चली गई। [कमी है]

# पूर्व जन्म स्मृति

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया, शव को उतारकर, कन्धे पर डाल हमेशा की तरह श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा! तुमको, जिसे सब भोग-विलासों का आनन्द लेना चाहिए था, इस तरह कष्ट उठाते देख, मुझे सारण देश की रानी की कहानी याद आ रही है। ताकि तुम्हें तकलीफ़ न हो, मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ, सुनो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

किसी ज़माने में एक चाण्डाल रहा करता था। वह गाँव से बाहर, एक निर्जन प्रदेश में एक झोपड़ी बनाकर उसमें रहा करता था। वह, उसकी पत्नी और उनके चार लड़के, बड़ी गरीबी में ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। सिवाय माँड़ के कभी

## बेताल कथाएँ

कुछ उन्होंने खाया न था। कभी कभी वह भी नहीं मिलता और वे पानी पीकर सो रहते।

चाण्डाल की पत्नी बड़ी अच्छी थी, गुस्सैल पति जब उसे मारता, या लड़कों को मारता तो वह कुछ न कहा करती। चाहे कितने भी कष्ट आयें, वह भूमि की तरह सहती रहती। वह बड़ी दयालु थी। अगर किसी को कोई कष्ट होता, तो वह दुःखी हुआ करती।

एक दिन दुपहर को वह घड़ा लेकर पानी के लिए बावड़ी के पास गई, वहां उसे एक गौ दिखाई दी, जो प्यास के मारे कराह रही थी। बावड़ी बड़ी गहरी थी। गौ उसमें उतरकर स्वयं पानी नहीं पी सकती थी। उसने बावड़ी से घड़े में पानी लाकर, उसके सामने रखा। पर घड़े का मुख छोटा था, इसलिए गौ पानी न पी सकी। इसलिए उसने घड़े का ऊपरला हिस्सा तोड़ दिया। तब वह गौ पानी पी सकी। उसने उस टूटे घड़े में कई बार पानी लाकर गौ को पिलाया।

जब पति ने देखा कि वह घड़ा लेकर गई थी और खाली हाथ आ रही थी, तो

उसे बड़ा गुस्सा आया। "अरे पानी के लिए गई और इतनी देर बाद आ रही हो।" उसने उसे डांटते हुए अपना चप्पल सीनेवाला सुआ उस पर फेंका, वह उसकी कनपटी पर लगा, वह बेहोश हो गई और थोड़ी देर बाद मर गई।

उसको ले जाने के लिए देवताओं ने स्वर्ग से विमान भेजा। उसे इन्द्र के सामने ले जाया गया। इन्द्र ने उससे कहा—"तुमने प्यास से मरती गौ को जल दान करके, उसके प्राण बचाये, इस तरह तुमने वह पुण्य पा लिया, जो कई यज्ञों के करने से भी नहीं पाया जा सकता है और तुम इस तरह उत्तम लोकों में, सभी दिव्य सुखों का अनुभव करने के योग्य हो गई हो। परन्तु चूँकि तुम्हारी अकाल मृत्यु हुई है, इसलिए तुम उत्तम कुल में जन्म लेकर, अपनी शेष आयु भूमि पर बिताकर वापिस चली आओ। तब तुम्हें दिव्यलोक की प्राप्ति होगी।"

यह सुनकर उसने कहा—"चाहे मैं कहीं भी जन्म लूँ, पर आप ऐसा कीजिये कि मुझे पूर्व जन्म की याद रहे। यह कृपा कीजिये।" इन्द्र इसके लिए मान गया।

जल्दी ही वह अवन्ती के राजा, वीरसेन महाराज के लड़की के रूप में पैदा हुई। उसके माँ बाप ने उसका नाम रत्नावली रखा। वह ऐश्वर्य के साथ बड़ी हुई। उसके सयानी होते ही, उसका सारण देश के युवराज के साथ विवाह किया गया।

कुछ वर्षों बाद, सारण देश में अकाल पड़ा। राजा ने अकाल पीड़ितों के सहायतार्थ कुँये और तालाब खुदवाये। यज्ञ आदि करवाये। इसी सिलसिले में राजधानी से बाहर एक बड़ा तालाब खुदवाया जा रहा था। एक दिन शाम को वीरसिंह अपनी पत्नी रत्नावली के साथ, टहलने के लिए उस तरफ़ गया, जहाँ तालाब खुदवाया जा रहा था। तालाब का खोदा जाना पूरा हो गया था, उसमें पानी भी आ गया था, सैकड़ों मज़दूर तालाब के चारों ओर बन्द बना रहे थे।

रत्नावली की नज़र, जो यह सब देख रही थी, एक बड़े पत्थर पर गई, उस पत्थर को पाँच आदमी बड़ी मुश्किल से हिला रहे थे। उनमें एक बूढ़ा था। बाकी अधेड़ थे, उनके शरीर पर पसीना बह रहा था, सब थकान के कारण दम भर रहे थे। रत्नावली ने उनको देखते ही पहिचान लिया। वह बूढ़ा पूर्व जन्म में उसका पति था। बाकी चार उसके लड़के थे। उनकी निम्न स्थिति और उनकी वह हालत देखकर उसका हृदय दहल उठा। "बाप रे बाप" वह ज़ोर से चिल्लायी और धड़ाम से नीचे गिर गई। उसी क्षण वह मर गई, उसका पति और अन्य लोग उसकी आकस्मिक मृत्यु पर बड़े दुःखी हुए।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, चूँकि रत्नावली को अपना पूर्वजन्म याद था, तभी क्या वह रानी के रूप में पैदा होकर भी, अपने पूर्व जन्म के पति को और बच्चों को देखकर, वह मर गई थी? उसने क्यों इन्द्र से निवेदन किया था कि उसकी पूर्व जन्म की स्मृति बनी रहे? इससे उसको हानि ही हुई थी, लाभ क्या हुआ था? इन प्रश्नों का यदि तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर फूट जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"ऐसा नहीं मालूम होता कि चाण्डाल की पत्नी को अपने जीवन से ग्लानि थी। उसने वे सब कष्ट सहे, जो उसे उस जीवन में उठाने पड़े थे। निकृष्ट जन्म पाकर भी उसने उत्तम लोकों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक पुण्य किया। इन्द्र ने जब कहा कि उसकी आयु अभी शेष थी। इसलिए उसको पूरा करने के लिए, उसे उत्तम जन्म मिलेगा, तब भी उसको भय बना रहा कि उसका वह जीवन, पूर्व जीवन से अच्छा न हो—इसलिए ही उसने चाहा था कि पूर्व जन्म की स्मृति बनी रहे। पूर्व जन्म में वह दयालु थी, रत्नावली के रूप में भी उसे दया ने छोड़ा नहीं। एक और बात यह भी है कि उसके मरने का कारण उनकी आयु का पूरा हो जाना ही है—अपने पूर्व जन्म के पति पुत्रों का कष्ट उठाना नहीं। न उसका उन पर दया दिखाना था।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। [कल्पित]

# राजनीति

यशवन्त देश के राजा के सामने जब वह दरबार में था, राज सैनिक एक बलवान युवक को हाथ बाँधकर लाये। उस युवक के पीछे ज़ोर से रोती एक युवती आयी।

राजा ने सैनिकों से पूछा—"कौन है यह! क्यों उसे सता रहे हो! यह स्त्री क्यों यूँ रो रही है!"

इन प्रश्नों का उत्तर उस रोती हुई स्त्री ने यूँ दिया—"महाराज, यह मानवता हीन राक्षस है। हत्यारा है। इसने मेरी माँ को निष्कारण मार दिया है। कल रात जब वर्षा हो रही थी, तो यह भीगा भीगा हमारे घर के पास जा रहा था कि मेरी माँ ने उसे देखा। तरस खाकर इसे घर के अन्दर बुलाकर, बाहर बराण्डे में बैठने के लिए कहा। यह जान कि यह परदेशी था, इस नगर में कोई बन्धु वगैरह न थे, मेरी माँ ने इसको पेट भर खाना खिलाया और सोने के लिए एक पलंग देकर, इसका अतिथि सत्कार किया। मेरे माँ को दमे की बीमारी है, वह अधिक हो गई और वह खाँय-खाँय करके खाँसने लगी। यह देख कि मेरी माँ की खाँसी से इसकी नीन्द उचट रही थी, इसको गुस्सा आ गया—माँ को डाँटते हुए इसने उसका गला तल्वार से काट दिया। मैं जब पगलायी-सी ज़ोर से चिल्लायी, तो आसपास के लोग जमा हो गये और इसे पकड़कर, उन्होंने सैनिकों को सौंप दिया।" यह कहकर, युवती फिर दुःख में सिसकने लगी।

राजा ने उसकी ओर आँखें लाल करते देखा। "अरे, नीच कहीं का, जिसने तुझे

अन्न दिया, उसको तुमने इतने छोटे से कारण पर मार दिया !"

हत्यारे ने न कोई पश्चात्ताप दिखाया, न भय ही—राजा की उसने परवाह भी न की।

"बुढ़िया ने भले ही मुझे रोटी दी हो, पर उसने खाँसकर, मेरी नीन्द क्यों बिगाड़ी ! मैंने उसे दो बार कहकर भी देखा, मेरी नीन्द बिगाड़ रहे हो, तुम खाँसो न। पर उसने सुना नहीं। खाँसती गई। मैं गुस्से में आ गया और मैंने उसे मार दिया। फिर मैं आराम से सो गया।" उसने कहा।

उसकी हत्या की अपेक्षा, उसकी उद्धतता ने दरबार में सब को गुस्सा दिला दिया। राजा ने सैनिकों से कहा—"यह मनुष्य नहीं है, एक प्रकार का जन्तु है। इसको ले जाकर, तुरत इसका सिर काट दो।"

तुरत मन्त्री ने उठकर कहा—"महाराज एक निवेदन है। आप इसे मारिये मत। इसको मुझे सौंप दीजिये।"

यह सुन राजा को आश्चर्य हुआ, दरबारियों को आश्चर्य हुआ। कोई न जान सका कि मन्त्री यूँ क्यों कह रहा था। परन्तु वह राजनीति में पारंगत था—बिना कारण के वह कुछ न कहता था। इसलिए राजा ने कहा—"अच्छा, मैं आपको सौंपता हूँ—यह आपकी जिम्मेवारी रही कि यह कहीं छूटकर न भाग जाये।"

मन्त्री ने उस हत्यारे के लिए एक विशाल कैद की व्यवस्था की, उस पर पहरा भी लगवाया। उसे भोजन और व्यायाम का शौक था—यदि दोनों हों, तो उसे किसी और चीज़ की ज़रूरत न थी। इन दोनों के लिए मन्त्री ने व्यवस्था करवादी थी। उस युवती की, जिसकी

माँ मारी गयी थी, उसने उपयुक्त वर खोजकर, शादी करवा दी।

कुछ मास बीते। वह मस्त जंगली भैंसे की तरह हो गया। वह हमेशा तालें पीटता, पहरेदारों को कुश्ती के लिए ललकारता।

यशवन्त देश की एक पास के देश से लड़ाई हुई। सैनिक सब युद्ध में गये हुए थे। उसी समय दूसरी तरफ़ के सुल्तान ने, अपनी सेना के साथ आकर, यशवन्त की राजधानी पर हमला किया और किले के बाहर डेरे डलवा दिये। इस तरह उस राज्य पर आफ़त आ पड़ी।

तब मन्त्री को अपने कैदी से काम आ पड़ा। उसने अपनी चाल के बारे में राजा को बताया—आक्रमण करनेवाले सुल्तान के नाम खत लिखवाया, उस पर राजा की मुद्रा लगवायी। तब मन्त्री ने अपने आधीन कैदी को बुलाकर, कहा—"हमारे देश में एक सुल्तान नगर के बाहर आया हुआ है, एक डेरे में है। राजा का दूत बनकर, तुम इस चिट्ठी को ले जाकर सुल्तान के पास जाओ और उनका उत्तर लाओ। क्या डर जाओगे?"

"मुझे क्या डर है!" कहता वह हत्यारा मन्त्री के दिये हुए पत्र को लेकर, दो सैनिकों को साथ लेकर, शत्रुओं के डेरे के पास गया।

यशवन्त राजा के पास से दूत आया है, यह जानते ही सुल्तान ने सोचा कि वे समझौता चाहते हैं। वज़ीर और सिपहसलार को अपने पास बुलाया, दूत को अपने सामने हाजिर करने के लिए सैनिकों से कहा।

दूत का दर्प और धैर्य देखकर, सुल्तान ने सोचा कि वह कोई बड़ा कर्मचारी

होगा। उसने डेरे में बैठे तीन लोगों को देखकर कहा—"तुम में सुल्तान कौन है?"

"मैं, तुम क्या सन्देश लाये हो?" सुल्तान ने कहा।

दूत ने, मन्त्री ने जो चिट्ठी देने के लिए कही थी, वह सुल्तान को दे दी सुल्तान ने उसे खोलकर पढ़ा और गुस्से से आग-बबूला हो उठा। उस पत्र में सुल्तान को डाँटा गया था, उसे गालियाँ दी गई थीं। सुल्तान ने उस पत्र को वज़ीर और सिपहसलार को दिखाया। उन्होंने उस खत को पढ़कर, गुस्से में एक दूसरे की ओर देखा।

"तुम कितनी देर मुझे यहाँ खड़ा रखोगे? क्या है तुम्हारा उत्तर?" दूत ने दान्त पीसते हुए कहा।

"मेरा उत्तर यह है।" कहते हुए सुल्तान ने उसे लात मारी। तुरत दूत ने तलवार निकाल कर, सुल्तान का गला काट दिया। जब वज़ीर और सिपहसलार ने उस पर हमला किया, तो उसने उनका भी खातमा कर दिया। सुल्तान के अंगरक्षकों ने उसको घेर लिया। उनमें से जब कई मर गये, तभी वह मारा जा सका।

जब दो-चार क्षण में सुल्तान, वज़ीर और सिपहसलार मर गये, तो सेना को आज्ञा देनेवाला कोई न रहा, तो सुल्तान की सेना को वापिस चले जाना पड़ा। यशवन्त देश पर से, एक बड़ी आपत्ति ही न टली, बल्कि एक पड़ोस का धोखेबाज़ सुल्तान भी खतम हो गया।

राजा ने मन्त्री की खूब प्रशंसा की और उसको बहुत से पुरस्कार दिये।

# फूल पैदा करनेवाला

एक गाँव में बूढ़ा और उसकी पत्नी रहा करते थे। वे बहुत गरीब थे। साल भर बूढ़ा कुछ न कुछ किया करता, पर उनका समय न कटता। उनके बच्चे न थे। वे एक कुत्ता पाला करते और उसे ही प्रेम से देखा करते।

एक दिन शाम को बूढ़ा अपना काम खतम करके, जंगल की ओर टहलने निकला। उसके साथ उसकी पत्नी और कुत्ता भी निकले। वे पेड़ों के बीच में से, पगडंडी से जा रहे थे कि एक जगह कुत्ता रुका, ज़मीन में उसने कुछ सूँघा, फिर ज़ोर से चिल्लाया और फिर ज़मीन कुरेदने लगा।

जब पति पत्नी ने पास आकर देखा, तो जहाँ कुत्ते ने ज़मीन कुरेदी थी, उस गढ़े में उनको सोने के सिक्के दिखाई दिये। जब उन्होंने उस गढ़े को, थोड़ा और खोदा, तो कुछ और सिक्के दिखाई दिये। वे उन सिक्कों को लेकर, घर पहुँचे।

सिक्कों के मिलने के बाद, बूढ़ा गाँव के गरीबों के घर जाता और जब कभी उनको पैसे की ज़रूरत होती, उनको दिया करता, जहाँ कहीं वह जाता, उसका कुत्ता भी जाता।

बूढ़े ने उस धन से गरीब किसानों के पास अच्छे दाम पर खेत खरीदे, फिर उन्हीं को उनमें खेती करने दी। इस तरह उनकी मदद भी हो गई।

इस बूढ़े के घर के पास ही एक दुष्ट रहा करता था। वह क्योंकि नीच और

भी पड़ोसी ने कुत्ता न लौटाया, तो पति और पत्नी दोनों चिन्तित होने लगे।

आखिर बूढ़े ने पड़ोसी के घर के किवाड़ खटखटाये।

"कौन है? क्या कोई वक्त नहीं है?" खिझता, चिल्लाता, दुष्ट ने दरवाज़ा खोला और बूढ़े को देखकर उसने पूछा—"कुत्ते के लिए आये हो? कोई कुत्ता वुत्ता नहीं है, वह मर गया है।"

"मर गया है?" बूढ़े ने चिन्तित होकर पूछा।

"हाँ, मर गया है। मैं तेरे कुत्ते को यूँहि नहीं ले गया था—मैंने सोचा था कि वह मुझे भी कोई खज़ाना दिलायेगा। काफ़ी दूर तक उसे घुमाया फिराया। एक जगह उसने पैर से कुछ कुरेदा। जब मैंने वहाँ खोदा, तो सिवाय कँकड़ों के कुछ न निकला। तेरे कुत्ते को वहीं मार दिया और उसे, उस गढ़े में दबाकर, चला आया।" दुष्ट ने कहा।

उस दिन रात को बूढ़ा और बुढ़िया अपने कुत्ते के लिए रोये धोये। अगले दिन सवेरे बूढ़ा बाहर गया और कुत्ते की लाश को लाकर, उसने अपने आँगन में,

क्रूर था, इसलिए गाँव में उससे किसी की न पटती थी।

एक दिन बूढ़ा घर में न था, वह बुढ़िया को देखने आया। इधर उधर की बातें करते, कुत्ते को सहलाते हुए उसने कहा—"आज कल तुम कुत्ते को घुमा फिरा नहीं रहे हो, मैं इसे टहलाने ले जाता हूँ। क्या इसे मेरे साथ आने दोगी?"

बुढ़िया यह सुनकर बड़ी खुशी हुई और कुत्ते को दुष्ट को सौंप दिया। जब बूढ़ा घर आया, तो वह भी यह सुनकर खुश हुआ। पर जब रात हो जाने पर

जामुन के पेड़ के नीचे एक गढ़ा खोदकर, गाड़ दिया।

कुछ महीने बीते। उन्होंने देखा कि उनके आँगन का जामुन का पेड़ बहुत बढ़ गया था। उसका तना बढ़कर तिगुना हो गया था। उसकी एक टहनी घर पर चली गई थी, उनको डर लगा कि यदि कभी आन्धी आयी, तो वह टहनी घर पर न टूट पड़े।

बूढ़े ने उस टहनी को तोड़ डाला। उससे उसने एक ओखल बनाई। पति पत्नी ने सोचा कि उसमें कुछ कूटा जा सकेगा।

उस साल धान की फसल ठीक न हुई, लोग चावल के लिए हाय हाय कर रहे थे। बूढ़ा हमेशा की तरह गाँववालों की मदद कर रहा था, पर उनके कष्ट दूर करना उसके बस की बात न थी। जब उन्होंने अपना चावल गाँववालों में बाँट दिया, तो उनके पास ही चावल की कमी हो गई। जो कुछ बचा था, उसे वे बड़ी सावधानी से बरत रहे थे।

जब ओखल तैय्यार हो गया, तो बुढ़िया ने उसमें मुट्ठी मुट्ठी-भर धान डालकर कूटना शुरु किया। बूढ़े ने आकर देखा, तो

ओखल चावल के आटे से भरी थी। "क्यों, इतने चावलों को कूट रहे हो?" पति ने पूछा।

"मुट्ठी-भर ही तो डाले हैं।" पत्नी ने कहा।

जो चावल वह कूट रही थी, उसका आटा यूँहि बनता जाता था, जब उसने फिर मुट्ठी भर चावल डाले, तो फिर ओखल भर गया। पति पत्नी दोनों बारी बारी से सबेरे तक चावल कूटते रहे, अगले दिन सबेरे बूढ़े ने गाँव में सब को वह आटा बाँट दिया। सरदियाँ जाने तक किसी को उस गाँव में, बिना खाने के लिए मरने की नौबत न आयी।

एक दिन पड़ोस का दुष्ट, भोजन के लिए आया।

"लोग कह रहे हैं कि तुम्हारा ओखल अक्षयपात्र-सा है। तुमने उसी जामुन की लकड़ी से वह बनाया था, जिसके नीचे तुमने अपना कुत्ता गाड़ा था, यानि कुत्ता मरकर भी तुम्हारी मदद कर रहा है। मैंने बेवकूफी की कि उसको मार दिया। भूख के मारे मरा जा रहा हूँ।" दुष्ट ने कहा।

"ओखल में चावल कूटकर देती हूँ।" दयालु बुढ़िया ने कहा।

"तुम को कष्ट नहीं दूँगा। एक दिन यदि तुमने मुझे अपना ओखल दिया, तो मैं ही कूटकर दे दूँगा।" दुष्ट ने कहा।

पति पत्नी ने अपना ओखल उस दुष्ट को दे दिया।

जब शाम को बूढ़ा, अपना ओखल लेने गया, तो दुष्ट अपने घर के सामने कुछ लकड़ियाँ जला रहा था।

"क्या ठंड के लिए आग तैय्यार करने का यह समय है!" बूढ़े ने पूछा।

"ठंड के लिए आग नहीं! मैं उस मनहूस ओखल को जलाकर राख कर रहा हूँ।"

"मैंने जब दो चार चावल के दाने जो मेरे पास थे, उसमें कूटे तो आटे की जगह कँकर निकले।" दुष्ट ने कहा।

बूढ़े को बड़ा दुःख हुआ। उस दुष्ट ने स्वयं तो कुछ पाया नहीं, बाकी गाँववालों को भी उसने खाना देने न दिया। उसने कुत्ते को एक बार फिर मारा। वह ओखल की राख को एक पोटली में बाँधकर घर ले गया। अपने कुत्ते की स्मृति में उसने वह राख, जामुन के पेड़ के नीचे, जहाँ कुत्ते को गाड़ा गया था, डाली, तुरत पेड़ पर फूल आया। यह देखकर, बुढ़िया ने इस बारे में अपने पति से कहा। जामुन पर फूल आने का कारण, बूढ़े ने सोचा, वह राख ही थी। उसने वह आँगन के और फूलों पर भी छिड़की। यद्यपि सरदियों के दिन थे, तो भी खूब फूल लगे। यह गाँववाले भी जान गये। जिन जिन के घरों में फूल लगे थे, उन्होंने बूढ़े से राख माँगकर, उसे उन पर छिड़का और खूब फूल पैदा किये।

"फूल पैदा करनेवाले" के बारे में दूर दूर खबर पहुँची, पास के एक ज़मीन्दार ने अपने महल के चारों ओर फूलों के पौधे लगाये थे। पर न मालूम क्या कारण था कि उनमें से एक भी न बचा। जब बूढ़े की बात उस तक पहुँची, तो उसने उसे बुलाकर कहा—"यदि तुमने मेरे बाग में फूल खिला दिये, तो तुम्हें मुँह माँगा ईनाम दूँगा।"

जब बूढ़े ने अपने घर से थोड़ी राख ले जाकर, उस बाग में छिड़की, तो बाग नन्दनवन की तरह खिल उठा। बिना बसन्त के आये, किसी बाग का इस तरह फूल उठना, कभी किसी ने न देखा था। ज़मीन्दार ने बूढ़े को तरह तरह के ईनाम दिये।

बूढ़े की नामवरी सुनकर, पड़ोस का दुष्ट न सह सका। वह अगले दिन ज़मीन्दार के पास कुछ राख लेकर गया। "सुना है, असने उस बूढ़े की बड़ी प्रशंसा की है, परन्तु उसे राख मैंने दी है, विद्या मेरी है और नाम उसका हो रहा है। यदि मैंने अपनी विद्या का उपयोग किया, तो यह बाग दस गुना और बढ़ जायेगा।"

"ऐसी बात है। यह तो मैं नहीं जानता था। यदि तुमने बाग को अच्छा बना दिया, तो तुमको भी ईनाम दूँगा।" ज़मीन्दार ने कहा।

दुष्ट अपनी राख पौधों और पेड़ों पर छिड़कता गया। जब राख छिड़ककर उसने पीछे मुड़कर देखा, तो बाग में हर पौधा और पेड़ मर गया था।

ज़मीन्दार को गुस्सा आ गया, उसने उस दुष्ट की हड्डी पसली एक करके भिजवा दिया।

# मदद माँगनेवाला भूत

पन्नालाल के गाँव से उसके ससुराल के गाँव के रास्ते में कपालीश्वर नाम का एक गाँव था। उस गाँव में एक धनी था, उसकी शान्ता नाम की एक लड़की थी। वह विवाह योग्य हो चुकी थी।

उसी गाँव में जगतराम नाम का एक युवक था। वह बुद्धिमान, सुन्दर और समझदार था, पर अनाथ और गरीब था। किसी समय जगतराम का भी अच्छा खाता पीता परिवार था, परन्तु उसका पिता दुर्व्यसनों के कारण, सब कुछ खो बैठा था। वह छुटपन में ही गुज़र गया था। गरीबी इतनी थी कि वह उसी गाँव में, घर घर खाता पड़ने लगा।

परन्तु गाँववालों ने उसका इतना ख्याल किया कि उसको बिना भोजन के कष्ट न उठाने दिया, जिन घरों में वह खाया करता, उन परिवारों के लिए जो कुछ उससे बनता, वह करता। वह शान्ता के घर भी खाया करता था। इस प्रकार उसका शान्ता से परिचय हुआ और वह परिचय प्रेम में भी परिवर्तित हो गया। शान्ता ने, जगतराम की जब भी हो, पत्नी होने का निश्चय किया। जगतराम भी उसे चाहता था।

जब शान्ता को मालूम हुआ कि उसके माता पिता, उसके विवाह के बारे में सोच रहे थे, तो उसने अपनी इच्छा के बारे में अपनी माता से कहा।

शान्ता का, जगतराम जैसे गरीब के साथ विवाह करना उसके माँ बाप को बिल्कुल पसन्द न था। शान्ता को उन्होंने खूब डाँटा फटकारा भी कि क्यों उसने

वैसे आदमी से दिल लगाया था। उन्होंने जगतराम से भी कहा कि वह कभी उनके घर न आये।

इस तरह की परिस्थिति पैदा होने के कारण, शान्ता और जगतराम के मन को काफ़ी चोट लगी। परन्तु उनका प्रेम नहीं बदला। जगतराम उस गाँव को छोड़कर चला गया और राजधानी में जाकर, उसने राजा के यहाँ नौकरी भी पाली। वह कपालीश्वर गाँव फिर वापिस आया, शान्ता के पिता के यहाँ काम करनेवाली एक बूढ़ी दासी से मिलकर उसने कहा—"शान्ता से एक बात कहना, मुझे राजा के यहाँ नौकरी मिल रही है। यदि रात को शान्ता धर्मशाला के पास आयी, तो मैं उसकी वहाँ प्रतीक्षा कर रहा होऊँगा। फिर हम दोनों राजधानी जाकर यथाविधि विवाह कर लेंगे। क्या यह बात शान्ता तक पहुँचा दोगी?" दासी इसके लिए मान गई।

दासी से, जगतराम का सन्देश पाकर शान्ता, अपने गहने और कुछ कपड़े लेकर, ठीक आधी रात के समय निकल पड़ी। पर अभी वह घर से बाहर भी न गई थी कि माता पिता द्वारा पकड़ ली गई। माँ ने उसे बुरी तरह फटकारा, पिता ने तो उसे पीटा भी। दोनों ने कहा कि वह उनके वंश पर कलंक लगा रही थी। उसके बाद घर ही उसके लिए जेल-सा बन गया।

उस दिन रात को जगतराम, चबूतरे पर सवेरा होने तक प्रतीक्षा करता रहा, फिर निराश होकर, राजधानी की ओर चला गया। नौकरी करने लगा। इसके कुछ दिन बाद ही, उस राजा का, पास के राजा के साथ युद्ध हुआ। जगतराम जीवन से विरक्त होकर, युद्ध में शामिल हो गया।

मौत से बिना डरे, खूब लड़ा। घायल हो गया और कई दिनों बिस्तरे पर पड़ा पड़ा, चिकित्सा करवाता रहा।

इस बीच शान्ता के माँ बाप ने उसका विवाह करवाकर, उससे पिंड छुड़वाने की काफ़ी कोशिश की। पर वे सफल न हुए। कोई सम्बन्ध भी न आया। उनका यह ख्याल था कि कोई भी जगतराम और शान्ता के प्रेम के बारे में नहीं जानता था, पर सारी दुनियाँ इस बारे में जानती थी। इसलिए शान्ता से विवाह करने के लिए कोई न आया। "न मालूम यह क्यों मेरे यहाँ पैदा हुई। इससे कोई शादी नहीं करेगा।" पिता ने लड़की को डाँटा। जब बात इतनी बढ़ी, तो उसने उसका जगतराम से ही विवाह कर देना चाहा। पर उसका कहीं पता न लगा। जब पूछताछ की गई, तो उसे बताया गया कि युद्ध में वह कभी का मर चुका था।

यह खबर सुनते ही, शान्ता ने आत्महत्या करने का निश्चय किया। एक दिन शाम को जब पिता घर में न था और माँ किसी काम पर थी, वह घर से निकल पड़ी। सूर्यास्त के समय, एक निर्जन स्थल पर आयी

और वहाँ एक तालाब में गिरने को गई। पर उसे लगा, जैसे उसे कोई पीछे से खींच रहा हो। वह पीछे गिर पड़ी, चारों ओर देखा, कहीं कोई नहीं दिखाई दिया। वह उठकर, फिर तालाब की ओर भागी। फिर उसे लगा कि कोई पीछे से खींच रहा था। वह नीचे गिर गई, उसने चारों ओर देखा। पर कहीं कोई न दिखाई दिया। जब तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ तो वह चिल्लायी—"मुझे मरने भी दो।" उसी समय, पन्नालाल अपनी ससुराल जाकर, गाड़ी में वापिस जा रहा था। उसने

शान्ता का चिल्लाना सुना। जब गाड़ी पास पहुँची, तो उसने तालाब के किनारे शान्ता को गिरे हुए देखा।

पन्नालाल उसके पास गया—"कौन हो तुम? यहाँ अकेली क्या कर रही हो? अभी तुम क्यों ज़ोर से चिल्लायी थी?" शान्ता ने अपनी परिस्थिति बिना कुछ छुपाये उसको बता दी।

"आत्महत्या बड़ा पाप है। यदि तुम्हें अपना घर नरक-सा लगता है, तो हमारे घर आकर रहो। मैं तुम्हें कोई कष्ट नहीं होने दूँगा।" पन्नालाल ने कहा।

शान्ता जैसे जैसे पन्नालाल को देखती जाती थी, वैसे वैसे अनुभव करती जाती थी, उस जैसा विश्वास पात्र कोई न था। वह उसके घर जाने के लिए मान गई।

तभी अन्धेरा हो चुका था। पास के गाँव पहुँचने के लिए कम से कम पाँच छः मील का फ़ासला तय करना था। तालाब के इस तरफ़ एक पुराना घर था। पन्नालाल शान्ता को गाड़ी में सवार करके, उस घर में ले गया। तभी चन्द्रमा उदय हो रहा था। घर पुराना ज़रूर था, पर अभी पूरी तरह खण्डहर नहीं हुआ था। घर के सामने इधर उधर की घास फूस बढ़ गई थी। पन्नालाल ने दीया जलाया। गाड़ी में से खाने पीने की चीज़ें उतारकर, चुल्हा बनाकर, तालाब से पानी लाया। दोनों ने मिलकर आसानी से खाना तैय्यार कर लिया।

घर के पास के रास्ते से, घोड़े पर सवार होकर, एक आदमी जा रहा था। घर में दीया जला देख, वह चिल्लाया—"कौन है वहाँ, उस भूतों के घर में न रहो। मर मरा जाओगे।" फिर वह अपने रास्ते चला गया।

पन्नालाल को भूतों का डर न था। जब उसने शान्ता से पूछा, तो उसने कहा—"मैं मरने को तैय्यार हूँ, तो मुझे क्या डर....!"

"कल तुम्हें तालाब में गिरने से बचाने वाला इस घर का भूत ही होगा।" पन्नालाल ने कहा। दोनों ने थोड़ा बहुत खाया, फिर बराण्डे के एक दूसरे सिरे पर सो रहे।

"आधी रात के समय पन्नालाल को ऐसा लगा, जैसे कोई बात कर रहा हो। शान्ता भी जाग उठी। उन दोनों ने कोई सफ़ेद-सी चीज़ हवा में तैरती देखी। उसे देख, शान्ता ज़ोर से चिल्लाई।

"डरो मत। मैं तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ूँगा।" उस आकृति ने कहा।

पन्नालाल ने उठकर पूछा—"तुम कौन हो! क्या चाहते हो!"

"मेरा एक उपकार करो। मैं इस घर का मालिक गोपीचन्द हूँ। अब पिशाच बन गया हूँ। यह लड़की मेरे पोते की लड़की है, इसके पति को लाकर, इन दोनों को इस घर में बसवाओ। तब तक मुझे पिशाच ही बना रहने पड़ेगा। यदि तुमने यह मदद की तो, मैं मुक्त हो जाऊँगा।" उस आकृति ने कहा।

"मैं सहायता करने के लिए तैयार हूँ। इस घर में कौन कैसे रह सकता है?" पन्नालाल ने पूछा।

"बेटा! इस घर की इस हालत का कारण मैं ही हूँ। इस घर में बहुत-सा धन है। घर भी अच्छा है। मैं अपनी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" यह कहकर, पिशाच अपनी कहानी सुनाने लगा।

तीस वर्ष पहिले इस घर में बहादुर गोपीचन्द के नाम से मैं बड़े वैभव के साथ रहता था। मेरा लड़का दुस्संगत में आकर, मेरी परवाह न करके रुपये को पानी की तरह खर्चने लगा। मैंने जो कुछ कमाया था, उनसे सोने के सिक्के जमा किये और उन्हें घर के बीचों बीच गड़वा दिये। यह भेद मेरे साथ ही चला गया। इसके बाद मेरी स्थिर सम्पत्ति मेरे लड़के के हाथ आयी, उसने उसको गिरवी रखकर, खूब कर्ज लिया। जब लेनदारों ने तकाजा किया, तो अपने लड़के को छोड़-छाड़कर, कहीं चला गया और बुरी मौत मरा। महाजनों ने घर पर कब्जा कर लिया। परन्तु इस रूप में मैं उस धन की रक्षा करता आ रहा हूँ और किसी को इस घर में रहने नहीं दे रहा हूँ। मेरा पोता जगतराम है। यदि वह आकर इस घर में रहा, तो मेरी जिम्मेवारी जाती रहेगी। जो अनजाने यहाँ आते हैं, मैं उनसे, अपने पोते को लाने के लिए कहता हूँ। किसी ने मेरी मदद न की, मेरे सौभाग्य वश मेरे पोते की पत्नी ही इस तरफ़ आयी। उसे मैंने तालाब में गिरने भी न दिया।

सब सुनकर पन्नालाल ने पूछा—"तुम्हारा पोता जगतराम रहता कहाँ है?"

"वह राजधानी में है। चिकित्सा के बाद, वह अब पूर्ण स्वस्थ भी हो गया है।" पिशाच ने कहा।

"तुम जाकर, अपने पोते से क्यों नहीं कह देते!" पन्नालाल ने पूछा।

"मैं इसी चिन्ता में तो पिशाच हुआ हूँ कि जो कुछ धन मैंने गाड़ रखा है, वह मेरे पोते को मिले। मैं उसे छोड़कर नहीं जा सकता, रात-दिन उस धन की रक्षा करना ही मेरा काम है।" पिशाच ने कहा।

"अच्छा, मैं तुम्हारे पोते को खोजकर लाऊँगा और उसे इस घर में बसाऊँगा। तुम निश्चिन्त रहो।" पन्नालाल ने कहा।

पिशाच अदृश्य हो गया।

पिछली रात को घोड़े पर, उधर से जो व्यक्ति गुज़रा था, सवेरे फिर उधर आया। रात को जिनको देखा था, उन्हें जीवित देख, उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उस आदमी ने पन्नालाल से कहा कि वह घर कंजूस गोपीचन्द का था और वह पिशाच होकर, इस घर में रह रहा था—ऐसा सुना जाता था।

पन्नालाल शान्ता को अपनी गाड़ी में बिठाकर, राजधानी गया। वहाँ उसे आसानी से जगतराम का पता मालूम हो गया। जगतराम को सब बातें बताकर, वह उसे गोपीचन्द के घर ले आया।

पन्नालाल और जगतराम ने जब घर में खोदा, तो एक सन्दूक में बहुत-से सोने और चान्दी के सिक्के थे। पन्नालाल कुछ दिन वहीं रहा। उसने उसे ठीक करवाया, मरम्मत करवायी, आँगन भी बनवाया। उसने जगतराम और शान्ता का विवाह किया। उसने ही स्वयं कन्यादान किया। उन दोनों को उस घर में बसा कर, वह अपने घर वापिस चला गया।

# कौन-सी बड़ी विद्या है?

एक गाँव से तीन लड़के एक गुरु के पास पढ़ने के लिए एक साथ गये। गुरु बड़ा विद्वान था, जो कोई जैसी विद्या चाहता था, वैसी वह सिखा सकता था। उनमें से एक वैद्यक सीखने लगा। दूसरा ज्योतिष और तीसरा तर्क पढ़ने लगा। गुरु को उनकी परीक्षा लेनी थी।

एक दिन एक बड़ा आदमी, गुरु के पास एक जन्मकुण्डली लाया, उसने गुरु को बताया कि वह-उस जन्मकुण्डलीवाले युवक से अपनी लड़की के विवाह की सोच रहा था। "बाकी सब ठीक है, यदि आप उसकी जन्मकुण्डली देख लें और यदि आपने विवाह की सलाह दी, तो विवाह कर दूँगा।" उसने कहा।

गुरु ने जन्मकुण्डली देखकर कहा—"इस लड़के के विवाह योग के साथ कुछ दुष्ट ग्रह भी हैं। विवाह के कुछ दिन बाद उसे बीमारी होगी।" यह सुन वह आदमी दुःखी होने लगा। गुरु ने अपने तीनों शिष्यों से परामर्श लेते हुए पूछा—"तुम इनको क्या सलाह देते हो!"

तुरत तर्क के विद्यार्थी ने कहा—"प्रति व्यक्ति की जन्मकुण्डली में कभी न कभी दुष्ट ग्रह आते ही हैं। यदि और बातें ठीक हों, तो अवश्य विवाह कर देना चाहिए।"

वैद्यक के विद्यार्थी ने कहा—"वर को बीमारी ही न होगी! ऐसा कौन है, जिसको बीमारी न होती हो। यदि अच्छे वैद्य को बुलाकर चिकित्सा करवायी गई, तो बड़ी-सी बड़ी बीमारी भी ठीक हो सकती है।"

ज्योतिष के विद्यार्थी ने कहा—"इसके लिए इतने तर्जन भर्जन की क्या आवश्यकता है। हम जानते ही हैं कि किन ग्रहों का दुष्प्रभाव होगा, हम विवाह के समय ही उनके लिए शान्ति करवा देंगे।"

थोड़े दिन बाद, जब गुरु कहीं बाहर गया हुआ था तो, उसके छोटे लड़के को ज्वर आया। गुरु की पत्नी ने लड़के को छूकर शिष्यों से कहा—"अरे अरे, लड़के का शरीर तप रहा है। देखो तो, क्या किया जाय!"

"ठंडा पानी डालिये सिर पर, स्वयं गरमी कम हो जायेगी।" कहता तार्किक घड़ा लेकर तालाब की ओर चला।

ज्योतिषी पंचांग लेकर, यह देखने लगा कि क्या दिन है, क्या तिथि है, क्या नक्षत्र है, किस ग्रह के दोष से बुखार आ रहा है।"

वैद्य ने लड़के को देखा, पता लगाया कि कैसा ज्वर था, फिर आवश्यक औषधियाँ लेकर, उन्हें पीस पासकर, उस लड़के की जीभ पर लगाया।

जब शाम को गुरु घर आया, तब लड़के का ज्वर उतर आया था।

गुरु की पत्नी ने, जो कुछ हुआ था, अपने पति को बताते हुए कहा—"यह तो देखा कि ज्योतिष के द्वारा लाभ होता है, वैद्यक द्वारा भी। परन्तु तर्क किस काम का है! आपके यहाँ जो तर्क सीख रहा था, वह बुखार आये हुए लड़के के सिर पर पानी उड़ेलने के लिए, घड़ा लेकर तालाब की ओर भागा था, जानते हो!"

"ज्योतिष और वैद्यक तभी काम आते हैं, जब ज़रूरत होती है, परन्तु तर्क की हमेशा ज़रूरत रहती है। कल ही उसकी परीक्षा लूँगा।" कहकर, गुरु ने पत्नी को

बताया कि वह कैसी परीक्षा लेने जा रहा था और उसको उस सम्बन्ध में क्या करना था।

अगले दिन जब सब मिलकर भोजन कर रहे थे, तब गुरु चिल्लाया—"अरे अरे, गलती से सेम के बीज जितना बड़ा जहरीला कीड़ा निगल गया हूँ।" फिर वह यूँ गिर गया, जैसे बेहोश हो गया हो।

"अरे अरे, गुरु जी को देखो क्या हो गया है!" गुरु की पत्नी चिल्लायी।

वैद्य और ज्योतिषी, दोनों खाना छोड़ कर, उठकर हाथ धो आये। वैद्य ने आकर गुरु की नाड़ी की परीक्षा की। ज्योतिषी ने पंचाग निकाला। तार्किक ने गुरु की ओर एक बार देखा और अपना भोजन करता गया।

गुरु की पत्नी ने उससे कहा—"तुम भी क्या शिष्य हो। गुरु जहरीला कीड़ा खाकर, गिरे पड़े हैं और तुम यूँ भोजन करते जा रहे हो, जैसे कुछ हुआ ही न हो।"

"गुरु ने कोई जहरीला कीड़ा नहीं खाया है। एक कीड़ा निगल रहा हूँ और वह विषैला है, सेम के बीज की तरह है—यह सब जानकर भी गुरु इतने पागल नहीं है कि कीड़े निगल जायें। खैर, मान लो, कीड़ेवाला कौर मुख में रख भी लिया—तो उसे थूक देते, निगलते नहीं।" तार्किक ने कहा।

गुरु ने आँखें खोलकर, उठकर अपनी पत्नी से कहा—"देखा, तर्क का क्या उपयोग है!"

इसके बाद गुरु ने बताया कि तीनों की शिक्षा पूरी हो गई थी।

# नादान का भाग्य

एक गाँव में सुब्बु नाम का एक लड़का रहा करता था। चूँकि उसके माँ बाप नहीं थे, इसलिए उसकी नानी उसे पालती आयी थी। नानी को नाती से बड़ा लाड़ था। यह सोच कि गाँव के लड़के गन्दे थे, दुष्ट थे, उसने अपने नाती को किसी का दोस्त न होने दिया। इसलिए वह लड़का, बिना किसी लोक ज्ञान के बड़ा होने लगा।

एक दिन सुब्बु नानी की बनाई हुई मठरियाँ लेकर, गाँव से बाहर बड़ के नीचे बैठकर उन्हें खाने लगा। उसे देखकर चार कुत्ते पूँछ हिलाते उसके पास आये। उसने चारों को मठरी का एक एक टुकड़ा दिया। फिर वे कुत्ते उससे बड़े हिल गये। हमेशा उसके पीछे ही दुम हिलाते चलते। अन्धेरा होने तक वह उन कुत्तों से खेल खालकर घर आता।

उसके बाद तो वह रोज बड़ के पेड़ के नीचे जा बैठता। कुत्ते भी दुम हिलाते उसके पास आते। जो कुछ वह खाने के लिए लाता, उसमें से वह कुछ उसे भी देता। कुत्तों की भक्ति उसके प्रति यूँ बढ़ने लगी। उसने उन कुत्तों का नाम रंगा, लिंगा, राम और भीम रखा। वह उनको उन नामों से ही पुकारा करता।

सुब्बु को रोज कहीं जाता देख, एक दिन उसकी नानी ने पूछा—"रोज कहाँ जाते हो तुम!"

"गाँव के बाहर जाकर राम, भीम, रंगा और लिंगा से खेलता हूँ।" सुब्बू ने कहा।

"ये कौन हैं!" नानी ने पूछा।

"ये बहुत अच्छे हैं। जैसा मैं कहता हूँ, वैसा ये करते हैं। बात तक नहीं करते।" सुब्बु ने कहा।

नानी को एक बात सूझी। सुब्बू रोज बड़ के नीचे बैठ ही रहा था। यदि मठरियाँ बनाकर उसको देकर, आते जाते लोगों को बेचने के लिए कहा गया, तो वह भी दो चार पैसे बनाने लायक कामकाजी हो जायेगा।

यह सोच नानी ने सुब्बु के हाथ अठन्नी रखकर कहा—"इसमें से चवन्नी लेकर मैदा खरीदो और बाकी चवन्नी ले आओ।"

सुब्बु को यह भी न मालूम था कि कहाँ मैदा बेचा जाता था। "क्या मैदा है!" उसने जाकर फलों की और फूलों की दुकान में पूछा। यहाँ तक कि लकड़ी की दुकान में भी पूछ आया। वहाँ भला मैदा कहाँ मिलता!

आखिर किसी ने उसको पन्सारी की दुकान दिखाई। उसमें उसने चार आने मैदे के लिए, दुकानदार के हाथ में अठन्नी रखी। दुकानदार ने चवन्नी के मैदे की पोटली बनाकर, उसे देते हुए कहा, छुटे पैसे नहीं है, चवन्नी का कुछ और लेले, नहीं तो कल सवेरे आना।"

"कल सवेरे आऊँगा।" सुब्बु दुकानदार से कहकर घर के लिए निकला। कुछ दूर जाने के बाद उसने सोचा कि यह देख लेना अच्छा था कि दुकान कहाँ थी। जब उसने फिर जाकर देखा, तो एक सफेद बिल्ली को दीवार से सटे लेटे पाया। यह याद करके, सुब्बु घर चला आया। नानी को उसने मैदा देते हुए कहा—

"बाकी चवन्नी दुकानदार कल सवेरे दे देगा।"

"गाँव में बहुत-सी दुकान हैं, तूने किस दुकान से यह लिया है?" नानी ने पूछा।

"मैं दुकान को अच्छी तरह जानता हूँ।" सुब्बु ने कहा।

मैदा ठीक ठाक करके, अगले दिन नानी ने मठरियाँ तैय्यार कर दीं। सुब्बु चवन्नी लाने के लिए निकला। सफेद बिल्ली को खोजता, वह एक दुकान के पास रुका। उस दुकान की बगल में एक सफेद बिल्ली लेटी हुई थी।

परन्तु वह दुकान एक दर्जी की थी। दर्जी अपनी दुकान में बैठा, कोई कपड़ा काट रहा था। यह देख सुब्बु चकित हो उठा। एक और बात यह थी, जैसे दुकान बदल गई थी वैसे ही दुकानदार भी बदल गया था, कल रात दुकानदार के मूँछें न थीं, पर अब उसकी बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। एक ही रात में मूँछें इतनी बड़ी कैसी हो गई? उसे अचरज हुआ। उसने दर्जी के पास जाकर अपनी चवन्नी माँगी।

"कौन-सी चवन्नी? किससे माँग रहे हो?" दर्जी ने चकित होकर पूछा।
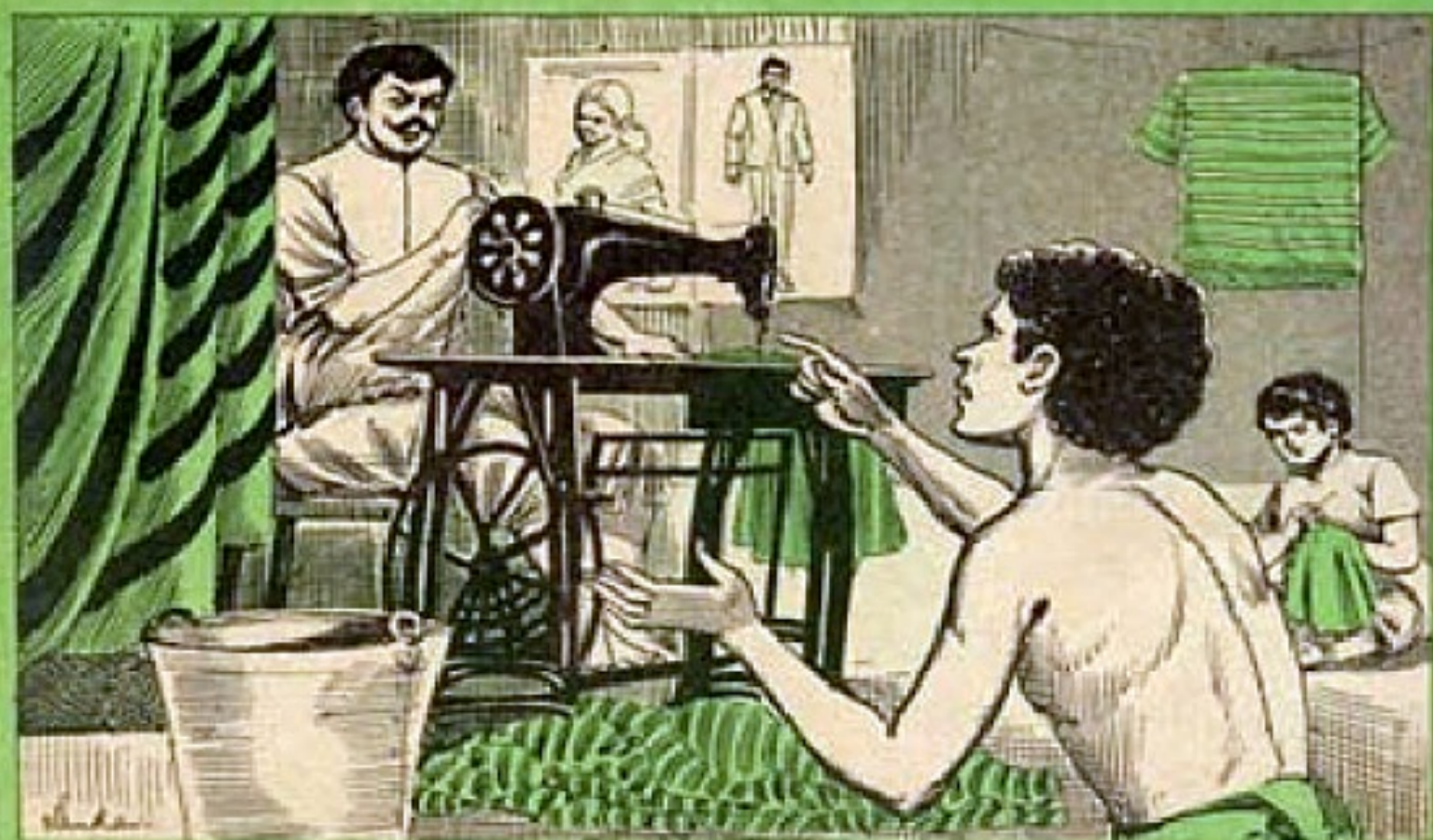
“तुम से ही माँग रहा हूँ। कल तुमने चवन्नी का मैदा देकर, कहा था कि आज आकर चवन्नी ले जाऊँ! फुटे पैसे नहीं थे तुम्हारे पास।” मुव्वु ने कहा।

“जा बे जा, पगले कहीं के।” दर्जी ने मुव्वु को दुकान से भगा दिया।

“मेरी चवन्नी हड़पने के लिए तुम वेष बदल रहे हो। कल तुमने जब मुझे मैदा बेचा था, तब तुम्हारे मूँछे न थीं और आज मूँछे बढ़ाकर, कपड़े काट रहे हो! देखता हूँ, तुम भी मेरी

चवन्नी खाकर क्या बनते हो!” मुव्वु ने कहा। उसने जो इधर-उधर देखा, तो दुकान के बाहर कतरनें पड़ी थीं। मुव्वु उन कतरनों की गठरी बाँधकर घर लौटा।

नानी को जब एक गठरी खोलते देखा, तो नानी ने चकित होकर पूछा—“यह सब क्या है!”

“दुकानदार ने बड़ा धोखा दिया है। चवन्नी उसने नहीं दी। इसलिए उसकी दुकान से यह सब उठा ले आया हूँ।” कहते हुए मुव्वु ने कतरनें नीचे डाल दीं। किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ हुई। देखा, तो वह रुपया था।

“देखा, मुव्वु! और कोई हो या न हो, भगवान तो है....उसने हमारी चवन्नी हड़पनी चाही, परन्तु हमें रुपया मिल गया।” नानी ने कहा।

उसने दस मठरियाँ बनाकर, मुव्वु को देते हुए कहा—“यह बेच आओ, इसमें से दो तुम खाना और बाकी आठ, आध आने के हिसाब से बेचोगे, तो चवन्नी मिलेगी।”

मुव्वु मठरियों को टोकरी में डालकर, बड़ के नीचे आ बैठा। चारों कुत्ते आये।

"एक एक मठरी आध आध आने में तुम दो दो ले लो।" उसने यह कह चारों को बताया कि मुझे एक एक आना देना है, यह याद रखना।

उसके घर आते ही नानी ने पूछा—"क्या मठरियाँ बेच डाली?"

"रंगा, लिंगा, राम, भीम ने दो दो खरीद लीं, घड़ी में सब बिक गईं।" सुब्बु ने कहा।

"पैसे कहाँ है?" नानी ने कहा।

"उनके पास इस समय नहीं है, उधार दे आया हूँ।" सुब्बु ने कहा।

"उधार! अरे दिवाला निकल जायेगा। कल का और आज का मिलाकर, ज़रूर वसूल कर लाना।" नानी ने कहा।

सुब्बु दस मठरियाँ लेकर, फिर बढ़ के पेड़ के नीचे चला आया। हमेशा की तरह कुत्ते दुम हिलाते आये। सुब्बु ने उन चारों को दो दो मठरियाँ दीं, स्वयं दो खाकर कहा—"पैसे कहाँ हैं? कल का आना और आज का आना मिलकर दो आने होते हैं। पहिले तुम दो दो आने दो।"
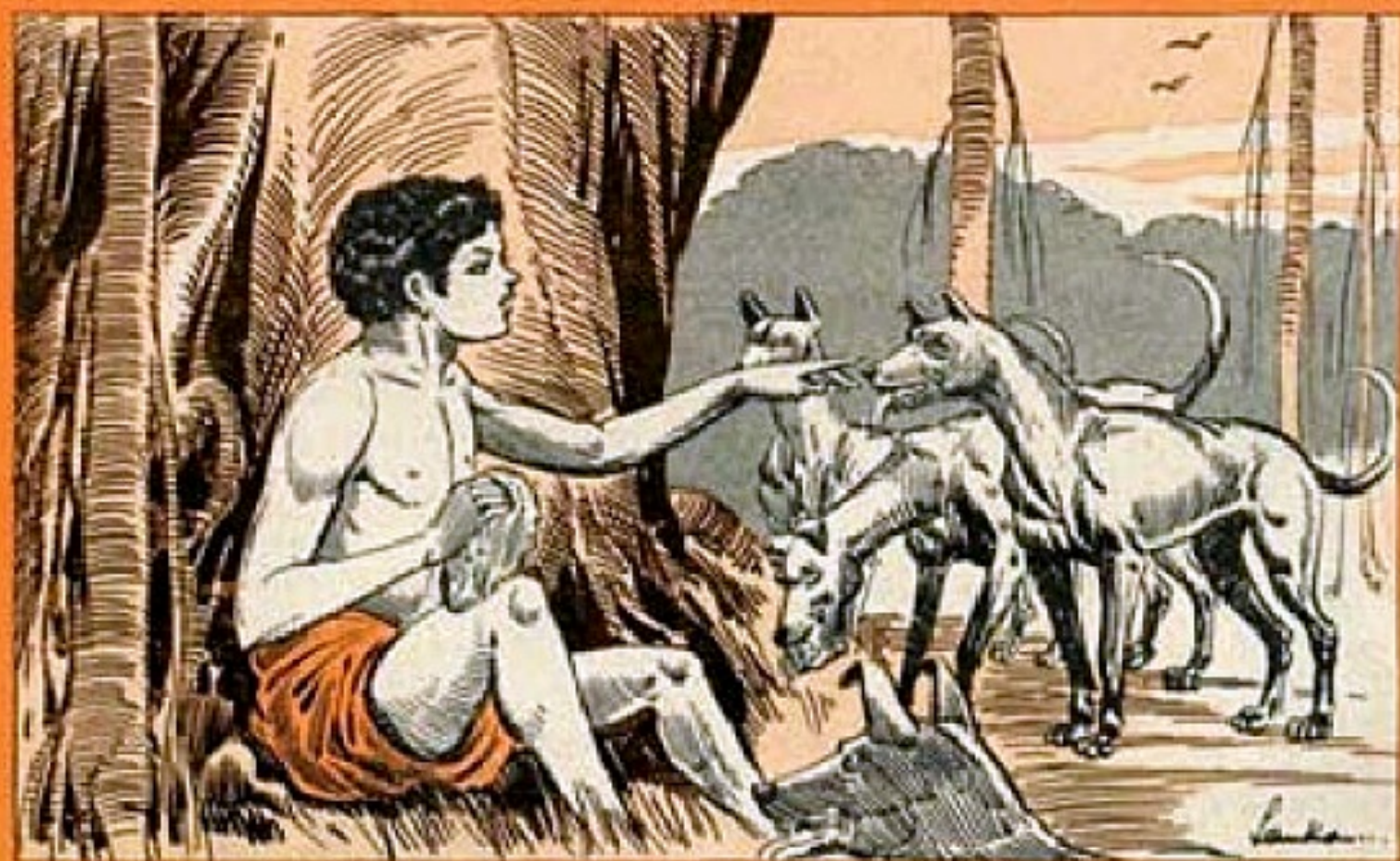
कुत्तों ने दुम हिलायी और यूँ दिखाया कि और भी मठरियाँ चाहते हों। परन्तु पैसे देने के लिए कुछ न किया।

सुब्बु को यह देख गुस्सा आया। उसने पास पड़ी लकड़ी से एक कुत्ते को मारा कि नहीं कि बाकी कुत्ते भाग निकले।

तीन कुत्ते तो कहीं भाग गये, पर वह कुत्ता जिसके चोट लगी थी, लँगड़ाता लँगड़ाता भागा जा रहा था—सुब्बु उसके पीछे दौड़ा।

वह कुत्ता जंगल की ओर भागा और वहाँ उजड़े मन्दिर में जा घुसा। उस समय कुछ चोर वहाँ आकर, चोरी का माल आपस में बाँट रहे थे। वे कुत्ते का चिल्लाना और एक आदमी की आवाज़ सुनकर, दीवार फाँदकर भाग गये।

सुब्बु वहाँ आया, उसने रुपयों के ढेर देखे। "ओहो, तो तुम्हारा यह रुपया है—मैं इन्हें गिन लूँगा, जब तक ये पूरे न हो जायेंगे, तुम्हें मठरियाँ देता रहूँगा।"

सुब्बु रुपयों की गठरी बाँधकर, कुत्ते को पास बुलाकर, उसको सहलाकर, घर चला आया।

सुब्बु ने नानी को रुपया देते हुए यह भी बताया कि कैसे वह रुपया उसे मिला था। तभी नानी जान सकी कि सुब्बु जिनको मित्र बता रहा था, वे कुत्ते थे और वह कुत्तों को ही मठरियाँ बेच रहा था।

यह सोच कि किसी और तरीके से उसकी नादानी न जायेगी, नानी ने उसको उस रुपये से पढ़ाया लिखाया और उसे कामकाजी बनाया।
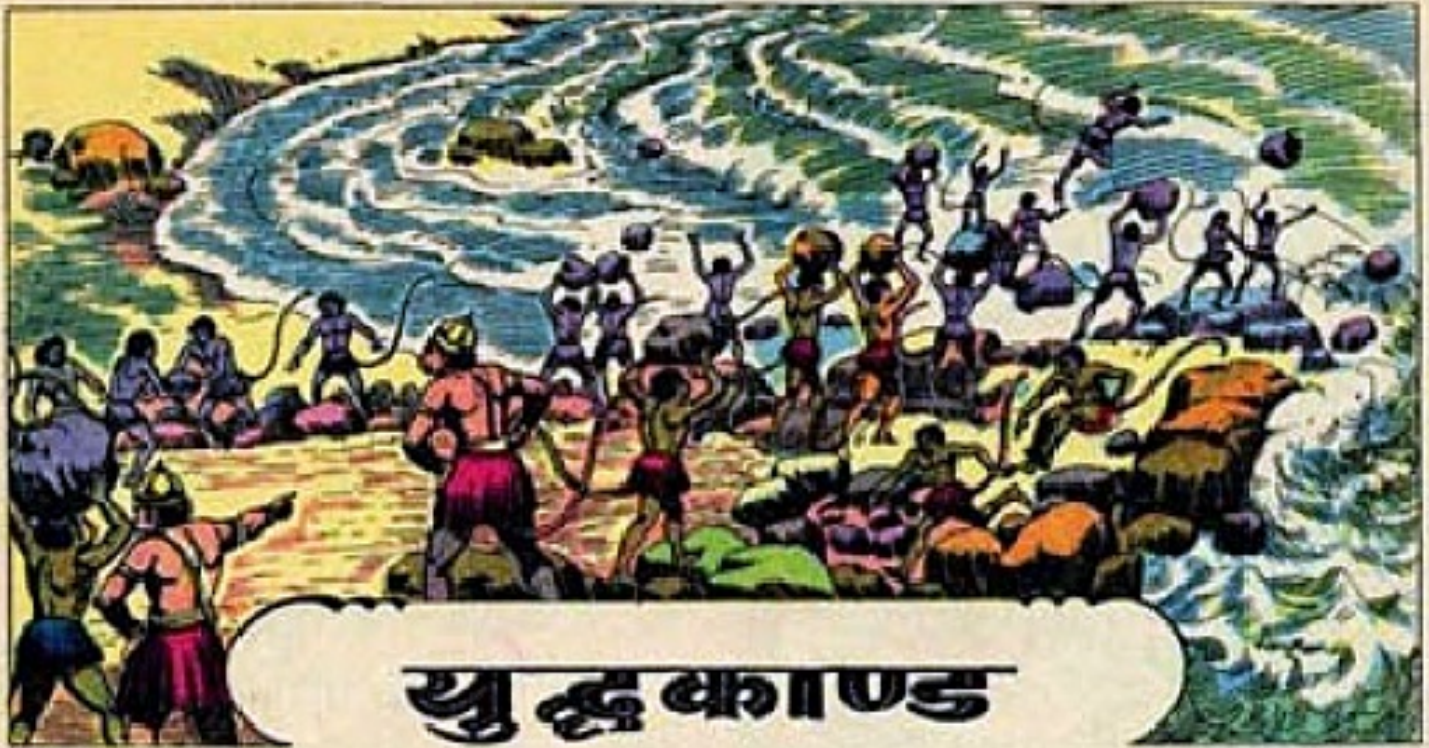
राम लंका के महल के पास आये।

उसके अन्दर बन्द सीता का उन्होंने ख्याल किया, फिर वानरों को आक्रमण करने की आज्ञा दी।

वानर तो युद्ध के लिए उद्यत थे ही, आज्ञा मिलते ही पत्थर, पेड़ वगैरह, लेकर झुन्डों में रावण के देखते देखते प्राकार पर चढ़ने लगे। उन्होंने प्राकार और नगर द्वार नष्ट कर दिये। खाइयाँ भर दीं।

रावण ने भी राक्षसों को युद्ध करने की आज्ञा दी। सिंहनाद, भेरी, शंख आदि, के हो हल्ले के साथ, वानर और राक्षसों में युद्ध प्रारम्भ हो गया।

इन्द्रजित ने अंगद से, जम्बुमाली ने हनुमान से, तप नामक राक्षस ने गज से, निकुम्भ ने नील से द्वन्द्व युद्ध किये।

इसी तरह अनेक वीर वानरों और राक्षसों में द्वन्द्व युद्ध हुआ। इन युद्धों में सम्पाति नाम के विभीषण के मन्त्री ने प्रजन्घु नाम के राक्षस को मार दिया। प्रघस सुग्रीव के हाथ मारा गया। विद्युन्मालिनी को सुषेण नाम के वानर वीर ने मार दिया।

इतने में सूर्यास्त हो गया। रात हुई। परन्तु दोनों पक्ष विजय पाने के लिए लड़ते रहे।

रात को वानरों और राक्षसों में घोर युद्ध हुआ। खून की नदियाँ बहीं। उत्तर द्वार की रक्षा करनेवाले यम शत्रु, महापार्श्व, महोदर, महाकाय, वज्रदंष्ट्र, शुक, सारण आदि ने राम पर आक्रमण किया, पर उनके तेज बाणों से घायल होकर वे भाग उठे।

कितने ही राक्षस राम के हाथ मारे गये। यूँ तो रात ही भयंकर थी, पर सिंहनाद और उनकी प्रतिध्वनियों से और भी भयंकर हो गई थी।

अंगद और इन्द्रजित में जो युद्ध हुआ, अंगद ने इन्द्रजित के सारथी और घोड़ों को मार दिया। इन्द्रजित अन्तर्धान हो गया, उसने माया युद्ध करना शुरु किया और वानर सेना पर बिजली की तरह बाण बरसाने लगा। राम लक्ष्मण को नागास्त्रों से बाँध दिया, उनके शरीर पर बिना कोई खाली जगह छोड़े, बाण बरसाये।

उसने उनसे कहा—"राम लक्ष्मण! जब मैं अदृश्य होकर युद्ध करता हूँ, तो इन्द्र भी मुझे नहीं जान सकता, पास भी नहीं आ सकता, फिर तुम्हारी क्या औकात है। तुम्हें अभी यम के पास भेजता हूँ।" वह फिर शेर की तरह गरजने लगा। राम, लक्ष्मण, भूमि पर गिर पड़े, वे क्या किया जाये, नहीं सोच पा रहे थे, राम को देखकर लक्ष्मण को डर लगा। हनुमान आदि वानरों का भी हौसला जाता रहा। उन्होंने सारा आकाश छान डाला, परन्तु इन्द्रजित कहीं न दिखाई दिया।

इन्द्रजित यह सोच कि राम लक्ष्मण दोनों मार दिये गये थे, उन्हें देख आने के लिए राक्षसों से कह लंका वापिस चला गया।

राम, लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव को डर और दुःख हुआ। विभीषण ने उससे

कहा—"दुःखी न हो, युद्ध ऐसा ही होता है, शुरु से अन्त तक क्या कभी विजय ही विजय मिलती है! यदि भाग्य ने साथ दिया, तो राम और लक्ष्मण को फिर होश आ सकता है।" उसने सुग्रीव के आँसू पोछे।

विभीषण सुग्रीव को यूँ आश्वासन देकर, उन वानरों को भी ढ़ाढ़स देने लगा, जो भागने को तैय्यार थे। चारों ओर वह सेना में घूमा। विभीषण के प्रोत्साहन ने वानरों में नया साहस भर दिया।

इन्द्रजित सीधे रावण की सभा में गया, पिता को नमस्कार करके उसने कहा—"राम और लक्ष्मणों को मार दिया है।"

रावण बड़ी खुशी में सिंहासन से उठा और उसने लड़के को गले लगा लिया। इन्द्रजित ने युद्ध के बारे में बताया, रावण ने उसकी प्रशंसा की।

उसने सीता पर पहरा देनेवाली त्रिजटा आदि, राक्षस स्त्रियों को बुलाकर कहा—"हमारे इन्द्रजित के हाथ राम और लक्ष्मण मार दिये गये हैं। सीता का काम खतम, अब वह सब आभूषण पहिनकर मेरे पास आ जायेगी। उस सीता को पुष्पक विमान में ले जाकर, युद्ध भूमि में ले जाकर, नीचे पड़े हुए राम और लक्ष्मण को दिखाओ।"

वे पुष्पक के पास गये। उसे लेकर अशोक वन में गये। उसमें सीता को बिठाकर, वे उनको युद्ध भूमि में ले गये। वहाँ उन्होंने राम लक्ष्मण को देखा और उनके चारों ओर वानर इस भय में बैठे थे, कहीं राक्षस आकर, उन पर हमला न कर दें। वे बहुत दुःखी हुईं।

ज्योतिषियों और भविष्य वक्ताओं ने बताया था कि वह विधवा न होगी, उन्होंने

बताया था कि उसके सन्तान होगी। महारानी बनेंगी, महा वीर उसका पति होगा, इस छोटे मोटे इन्द्रजित ने वे सब बातें झूटी साबित कर दीं। वे सब दिव्यास्त्र क्या हुए, जो राम और लक्ष्मण जानते थे। सारे देश में मुझे खोजकर लंका पार करके इन्द्रजित की माया का शिकार होने के लिए ही क्या आये थे! कौशल्या का क्या होगा, जो इसी आशा में बैठी हैं कि चौदह वर्ष का बनवास पूरा करके उनका लड़का, सीता और लक्ष्मण वापिस आयेंगे! यह भी क्या है!

इस तरह सीता को दुःखी देखकर, त्रिजटा ने कहा—"रो मत, राम और लक्ष्मण मरे नहीं हैं। वे मरे हुए तो नहीं मालूम होते।"

सीता ने यह सुन हाथ जोड़कर कहा—"तथास्तु"

फिर पुष्पक वापिस चला गया। सीता फिर अशोक बन में गई। प्रतिक्षण राम और लक्ष्मण का स्मरण करके आँसू बहाने लगीं।

युद्ध भूमि में कुछ देर बाद राम को होश आया। बगल में लक्ष्मण को नीचे गिरे पा, वे यह सोच निराश हो गये कि कहीं वह मर तो नहीं गया था। उन्होंने भी लक्ष्मण के साथ मर जाने की ठानी। सीता जैसी पत्नी, ढूँढ़ने पर शायद मिल सकती है, पर लक्ष्मण-सा भाई कहाँ मिलेगा! लक्ष्मण के बगैर युद्ध क्यों, उसमें विजय क्यों! क्या मैं अकेले जाकर सुमित्रा को देख सकूँगा! असम्भव।

राम को यह सोचकर भी निराशा हुई कि वह विभीषण को लंका का राजा नहीं बना सके थे।

उसने सुग्रीव आदि को जिन्होंने उनके लिए इतना कुछ किया था, अपनी कृतज्ञता दिखाई, उनके पराक्रम की प्रशंसा की। फिर सबको उन्होंने वापिस जाने के लिए कहा।

इतने में विभीषण अपनी गदा लेकर, सुग्रीव के पास गया। उसको दूरी पर देख, वानर यह सोच डरे कि कहीं फिर इन्द्रजित तो नहीं आ रहा था। वे भागने लगे। जाम्ब ने आकर उनको समझाया और रोका, जब उनको मालूम हुआ कि वह विभीषण था भागते वानर वापिस आ गये।

सुग्रीव ने समीप खड़े अपने ससुर, सुशेष से कहा—"राम और लक्ष्मण को होश आते ही उनको लेकर और कुछ वानर वीरों के साथ किष्किन्धा चले जाओ। मैं इस रावण को मारकर, सीता को ले आऊँगा।"

"पहिले देवता और दानवों का युद्ध हुआ था तो, बहुत-से देवता बेहोश हो गये थे। कई मर भी गये थे। तब बृहस्पति ने मृत संजीविनी जैसी विद्या की सहायता से जड़ी बूटियों से उनकी चिकित्सा की थी। जहाँ क्षीर समुद्र में

मथन किया गया था, वहाँ चन्द्र और द्रोण पर्वत हैं। वहाँ देवताओं ने संजीव करणी, विशल्य करणी आदि औषधियाँ पाल रखी हैं। हनुमान को भेजकर उन्हें मँगवाओ।" सुषेण ने कहा।

इतने में हवा आई। उस हवा में बादल तितर-बितर हो गये। समुद्र में लहरें उठीं, कुछ देर बाद गरुत्मन्त वहाँ आया। उसको देखते ही, वे नाग जिन्होंने बाण के रूप में, राम और लक्ष्मण को बाँध रखा था, भाग गये। फिर उसने अपने हाथों से उन दोनों का मुँह सहलाया। तुरत उनके घाव भर गये। उनमें पहिले की शक्ति आ गयी। उसने उन्हें उठाकर, उनका आलिंगन किया।

राम ने उससे कहा—"मुझे तुम्हें देखकर इस तरह प्रसन्नता हो रही है, जैसे मैंने अपने पिता या बाबा को देख लिया हो। तुमने दिव्य लेपन और दिव्य आभूषण धारण कर रखे हैं, तुम कौन हो।"

"मैं तुम्हारा मित्र हूँ। मेरा नाम गरुत्मन्त है। तुम्हें जिन नागों ने बाँध रखा था, वे कद्रुव की सन्तान हैं। इन्द्रजित ने उनको अपनी माया से बाण बनाकर, तुम पर उन्हें छोड़ा है। यह सुनकर मैं यहाँ आया हूँ। मैं तुम्हारा कैसे मित्र हूँ, यह मैं तुम्हें युद्ध में विजय मिल जाने के बाद बताऊँगा। राक्षस महामायावी हैं। तुम सम्भल कर उनसे युद्ध करो, तुम्हें विजय मिलेगी।" यह कहकर, गरुत्मन्त राम से विदा लेकर चला गया।

वानरों में फिर उत्साह आ गया। वे भेरियाँ बजाने लगे, शंख बजाने लगे।

सिंहनाद करने लगे। रावण को भी यह ध्वनि सुनाई पड़ी।

राम और लक्ष्मण के निधन में, जिन वानरों को रोना-धोना था, वे क्यों शोर कर रहे थे, यह जानने के लिए उसने अपने पहरेदारों को भेजा। वे प्राकारों पर चढ़ गये। चारों ओर देखा। फिर उन्होंने रावण के पास आकर कहा कि राम और लक्ष्मण मुक्त हो गये थे।

यह सुन रावण घबरा गया। "इन्द्रजित के लगाये हुए नाग बन्धन, देवता भी नहीं तोड़ सकते हैं—राम और लक्ष्मण का इनसे छूट जाना रावण सेना के लिए आपत्ति सूचित करती है।" उसने कहा। फिर उसने धूम्राक्ष को बुलाकर आज्ञा दी—"सेना के साथ जाकर, राम को मार कर आओ।"

धूम्राक्ष एक बड़ी सेना लेकर, भेड़ियों और शेर के मुखवाले गधों को रथ में जोत कर, वह युद्ध के लिए निकल पड़ा।

राक्षसों और वानरों में भयंकर युद्ध हुआ। दोनों तरफ़ असंख्य लोग मारे गये। आखिर राक्षस, वानरों का मुकाबला न कर

पाये और मैदान छोड़ने लगे। यह देख धूम्राक्ष झुँझला उठा और वह वानर सेना पर लपका। यह देख हनुमान को गुस्सा आया, उसने एक चट्टान लेकर, धूम्राक्ष रथ पर मारा। रथ तो चकनाचूर हो गया, पर धूम्राक्ष गदा के साथ रथ से नीचे कूद गया। हनुमान का उससे युद्ध हुआ। धूम्राक्ष ने अपनी गदा हनुमान के सिर पर फेंकी, हनुमान इससे नहीं घबराया, उसने एक पहाड़ की चोटी, धूम्राक्ष पर फेंककर, उसको मार दिया। वानरों ने हनुमान की प्रशंसा की।

यह जानकर कि धूम्राक्ष मर गया था। रावण ने वज्रदंष्ट्र को सेना के साथ भेजा। यह सेना लंका के दक्षिण द्वार से गयी। उस द्वार पर अंगद था, दोनों पक्षों में मुकामुकी हुई।

यह देख कि युद्ध में वानर मारे जा रहे थे, अंगद क्रुद्ध हो उठा और वह राक्षसों के सिर उड़ाने लगा। राक्षस उसके हमले का मुकाबला न कर सके। यह देख, उसकी सेना नष्ट हो रही थी, वज्रदंष्ट्र अंगद से भिड़ पड़ा। दोनों में कुछ देर युद्ध हुआ, फिर अंगद ने वज्रदंष्ट्र का सिर काट दिया, राक्षस लंका नगर में भाग गये।

तब रावण ने अकम्पन नामक राक्षस को सेनापति बनाकर भेजा। राक्षस और वानर दोनों ही विजय के लिए ज़ोर शोर से लड़े। कुमुद, नल, मैन्द, द्विविद आदि, वानर वीरों ने एक साथ राक्षसों पर हमला किया और खूब मारा।

यह देख, अकम्पन अपने रथ में, इन वानर वीरों के पास आया। वानर उसके बाणों को न काट सके। वे अकम्पन से मारे जाते, यदि हनुमान उनकी मदद के लिए न आता।

उसने अकम्पन के बाणों की परवाह न की, एक पहाड़ को पकड़कर घुमाता, अकम्पन की ओर लपका। अकम्पन ने अपने बाणों से उस पहाड़ के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। हनुमान को यह देख गुस्सा आ गया। उसने एक पेड़ उठाया और उससे अकम्पन का सिर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। वानर यह देख खुशियाँ मनाने लगे और राक्षस अपने हथियार पीछे छोड़कर भागने लगे।

# वेनु

ध्रुव के भ्रमी नामक पत्नी से कल्प, वत्सल, इला नामक पत्नी से उत्कल और लड़की हुए थे, यह हम पहिले ही जान चुके हैं।

ध्रुव राज्य त्याग करके तपस्या करने के लिए जब बदरी वन में चला गया, तो उसके बड़े लड़के उत्कल के राज्याभिषेक के बारे में सोचा गया।

उत्कल महाज्ञानी था। उसने यूँहि दिखाया कि वह गूँगा था, अन्धा और बहरा था। इसलिए उसने राज्य भार स्वीकार करने से इनकार कर दिया। यह देख बड़ों और मन्त्रियों ने सोचा कि वह सचमुच पागल था और भ्रमी के लड़के वत्सर का राज्याभिषेक कर दिया।

वत्सर के छः लड़के हुए। उनमें पुष्पार्ण वंशोद्धारक था। इसकी दो पत्नियाँ थीं, उनके छः लड़के हुए। उनमें व्युष्टि नाम के लड़के के सर्वतेज लड़का हुआ।

सर्वतेज के चक्षु नाम का लड़का हुआ, यह एक मनु था, इसके बारह लड़के हुए। उनमें उल्मूक के छः लड़के हुए। उनमें सबसे बड़ा अंग था। अंग की पत्नी का नाम सुनिथि था।

अंग राजर्षि के रूप में प्रसिद्ध था। उसने एक बार अश्वमेध यज्ञ किया। यज्ञ करने के लिए बड़े ऋत्विजों को नियुक्त किया गया।

उन्होंने बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से यज्ञ करवाया। परन्तु जब उन्होंने हवि लेने के लिए देवताओं को निमन्त्रित

किया तो देवता नहीं आये। ऋत्विजों को आश्चर्य हुआ।

उन्होंने अंग से कहा—"देवता आकर अपना हविर्भाग नहीं ले रहे हैं। हवि उत्तम है। यज्ञ में भी श्रद्धा की कोई कमी नहीं है। देवताओं का कहीं तिरस्कार भी नहीं हुआ। पर फिर भी देवता नहीं आ रहे हैं।"

इस परिस्थिति पर अंग को बड़ा दुःख हुआ। यज्ञ सदस्यों की अनुमति पर उसने मौनव्रत छोड़कर कहा—"सदस्यो, निमन्त्रित करने पर भी क्यों नहीं देवता, मेरे यज्ञ में आये हैं! मैंने गलती की है! जो यह जानते हों कृपया वे मुझे बतायें।"

इस पर सदस्यों ने कहा—"राजा, आप से कोई और गलती नहीं हुई है। शायद आपकी सन्तान का न होना ही एक गलती है। पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया गया, तो वह पाप भी चला जायेगा। पुत्रकामेष्टि यज्ञ में आप महाविष्णु की आराधना कीजिये, तब महाविष्णु के साथ, सब देवता आयेंगे, अपना हविर्भाव स्वीकार करेंगे। यही एक मार्ग है।"

तब पुत्रकामेष्टि व्रत शुरु किया गया। ऋत्विजों ने विष्णु के लिए अलग पुरोडाशा तैयार की और जब उसकी आहुति दी गई, तो होमकुण्ड से एक दिव्य पुरुष, सोने के पात्र में खीर लेकर प्रत्यक्ष हुआ।

ब्राह्मणों की अनुमति पर, अंग ने वह क्षीर पात्र लिया, उसकी सुगन्ध सूँघी और कुछ खाने के लिए सुनिथि को दी।

सुनिथि ने वह खीर खायी। उसके प्रभाव से वह गर्भवती हुई। यथा समय उसने एक लड़के को जन्म दिया। उसका नाम वेनु रखा गया।

सुनिधि का पिता मृत्यु बड़ा पापी था, वेनु में भी उसके लक्षण थे। वह छुटपन से ही बड़ा पापी था और हमेशा गन्दे काम किया करता। धनुष बाण लेकर जंगल में जाता और साधु पशुओं का शिकार करता, साथ के बच्चों को मारता पीटता। वेनु का नाम सुनते ही, सब की नाक भौं चढ़ती।

वह अंग, जिसे निस्सन्तान होने का दुःख न था, वेनु को देख बड़ा दुःखी रहता। उसको बदलने के लिए जो प्रयत्न किये गये वे सब असफल रहे।

पिता ने बहुत दुःखी रहने के बाद, यह अनुभव किया कि वैसे लड़के का भी उपयोग था। एक दिन आधी रात के समय अपनी पत्नी, सम्पत्ति, प्रासाद, सब छोड़ छाड़कर वह जंगल चला गया।

जब अगले दिन राजा नहीं दिखाई दिया, तो मन्त्री, पुरोहित, बन्धु बड़े चिन्तित हुए। उसके लिए बहुत खोजा, पर उसका कहीं पता न लगा।

राजा के न होने के कारण, अराजकता फैलने लगी। भृगु आदि मुनियों ने परिस्थिति को देख भाल कर यह निर्णय किया कि राजा के न होने से तो यही अच्छा है कि कोई दुष्ट ही राजा हो। पर राजा का होना आवश्यक है।
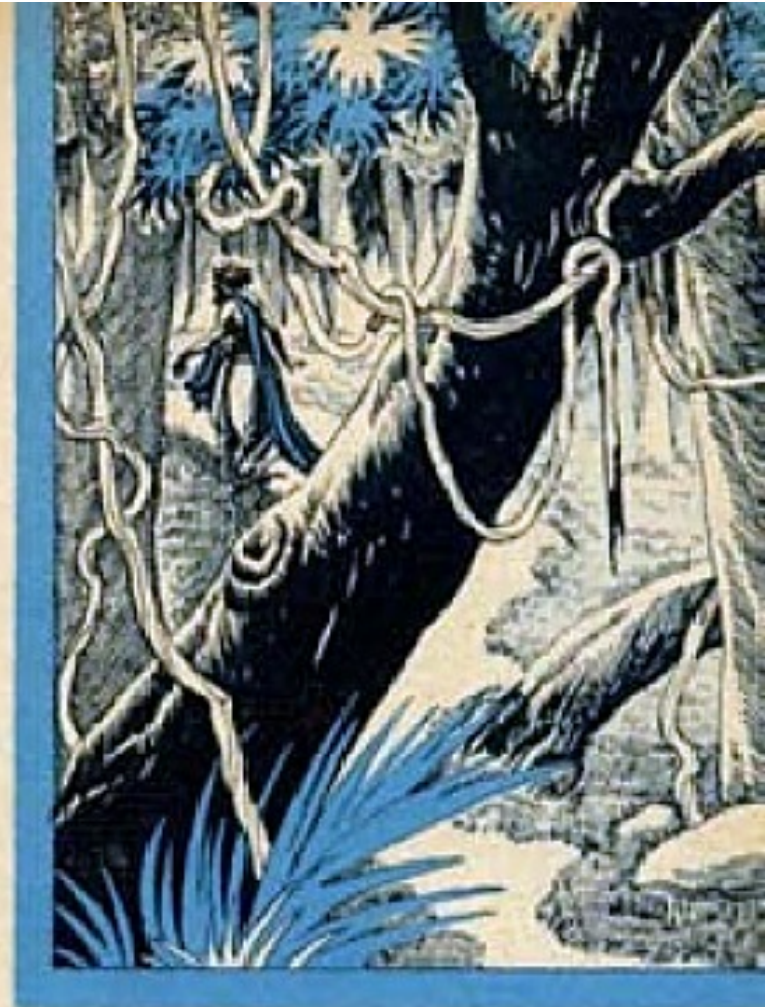
उन्होंने सुनिधि से कहकर वेनु का राज्याभिषेक करवाया।

राजा बनने के बाद, वेनु मत्त हाथी की तरह बर्ताव करने लगा। उसने बड़ों का भी अनादर किया। ब्राह्मणों को आदेश दिया कि यज्ञ, दान, होम, आदि बन्द कर दिये जायें। घोषणा कर दी कि कहीं कोई धार्मिक बातें न हों।

वेनु के परिपालन में प्रजा एक तरफ़ चोरों से सतायी जाने लगी, दूसरी ओर राजा से। उनकी हालत दोनों ओर से जलती लकड़ी की तरह थी।

मुनियों को, वेनु को राजा बनाकर, अपनी गलती समझ में आयी। उन्होंने वेनु के पास आकर कहा—"राजा, आज हमारी एक प्रार्थना सुनो, उससे तुम्हारी आयु, ऐश्वर्य और यश बढ़ेगा। प्रजा क्षेम के लिए धर्म आवश्यक है। जो धर्म की रक्षा करता है, उसे इह लोक और पर लोक मिलता है, जब धर्म खतम हो जायेगा, तब राजा का ऐश्वर्य भी नष्ट हो जायेगा। प्रजा का कुशल ही राजा के ऐश्वर्य का आधार है। दुष्ट मन्त्रियों से और चोरों से प्रजा की रक्षा करना राजा का कर्तव्य है। प्रजा के लिए अपने वर्णानुसार यज्ञ पुरुष भगवान की आराधना करना धर्म है। यज्ञों द्वारा देवता तृप्त होकर, प्रजा की इच्छायें पूरी करते हैं। उस स्थिति में यज्ञों का निषेध करना ठीक नहीं है।"

सब सुनकर वेनु ने मुनियों से कहा—"आप भी कितने मूर्ख हैं। सब कुछ देनेवाला ईश्वर स्वरूप जब मैं हूँ, तो क्यों किसी और का नाम लेते हैं! कौन है यह यज्ञ पुरुष! त्रिमूर्तियाँ, दिक्पालक, देवता, सब राजा के शरीर में ही तो होते हैं! इसलिए तुम अपनी बलियाँ मुझे ही दो। धर्म के नाम पर मुझे अधर्म न सिखाओ।"

यह सोच कि वेनु बदलेगा नहीं, सुधरेगा नहीं, मुनि उसको मारकर अपने रास्ते चले गये।

# ३६. श्वेत बुद्ध

कहा जाता है, यह मूर्ति ९९५ ई. में बनाई गई थी। यह पेगु (बर्मा) में है। १७५७ में अलोन्पाया नामक राजा ने पेगु पर हमला किया, तो जंगल में यह एक अज्ञात टीला-सी हो गई थी। १८८१ में जब यहाँ रेल मार्ग बनाया जाने लगा, तो इसका फिर पता लगा। यह मुस्कराते बुद्ध को शयनावस्था में दिखाती है। इसकी ऊँचाई १८१ फीट है।

Photo by P. R. Shinde
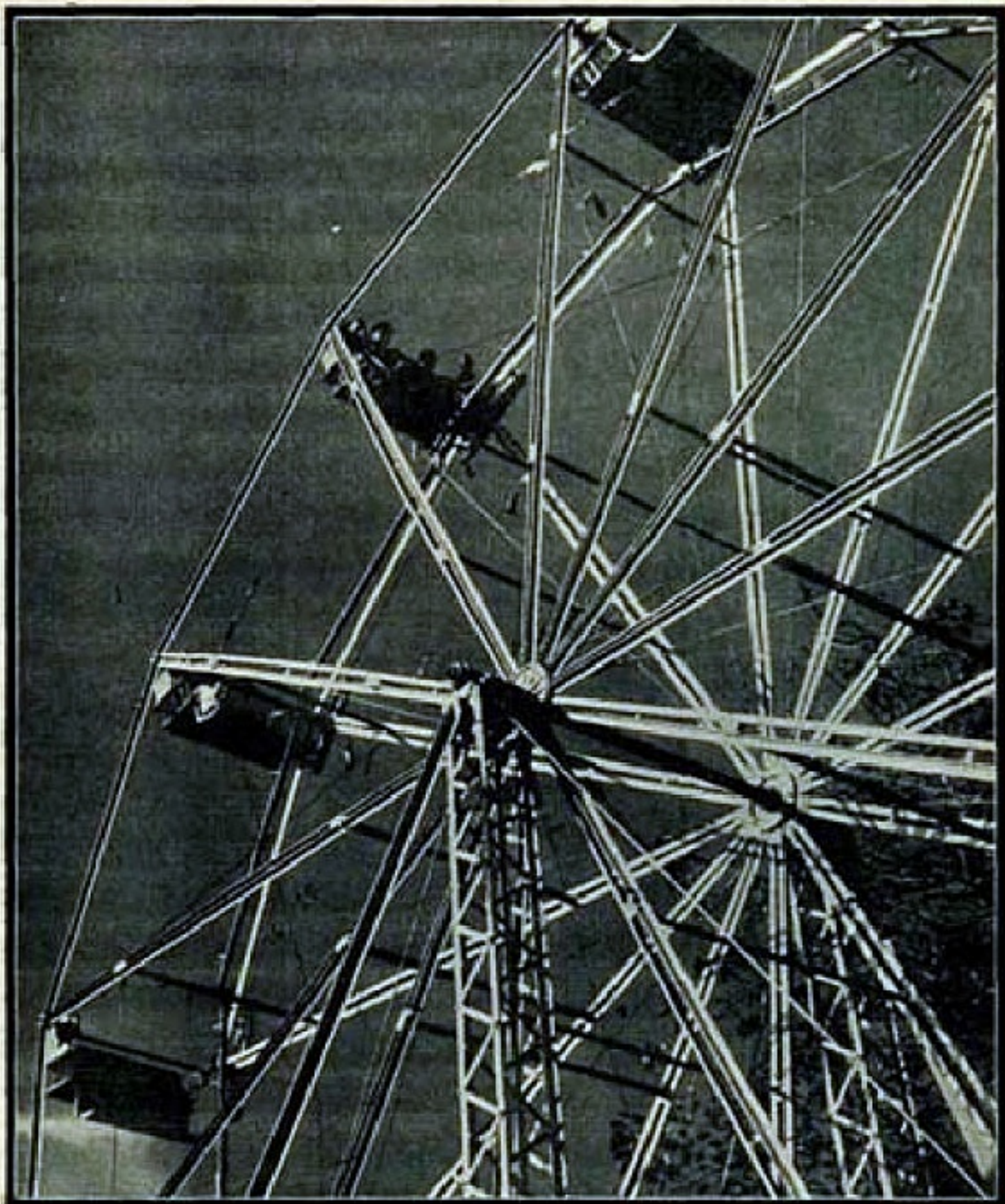
पुरस्कृत परिचयोक्ति

ऊपर तुम सम्भल कर जाना!

प्रेषक: किशोरीलाल - नई दिल्ली

Photo by Sundara Murthy
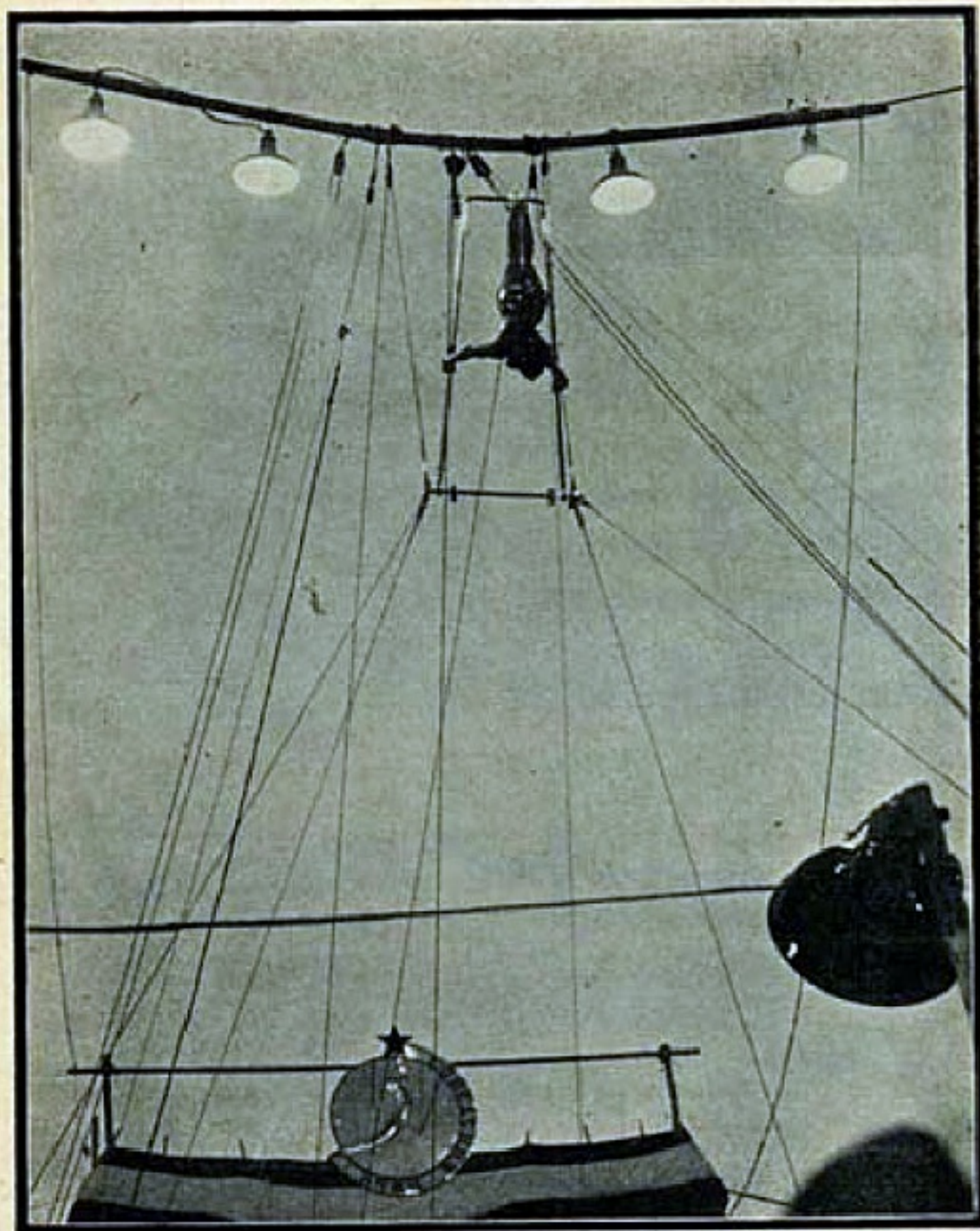
पुरस्कृत परिचयोक्ति

देखो तुम कहीं गिर न जाना !!

प्रेषक : किशोरीलाल - नई दिल्ली

# फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

फरवरी १९६५ :: पारितोषिक १०)

**कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !**

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ दिसम्बर १९६४ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

---

## दिसम्बर – प्रतियोगिता – फल

दिसम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: ऊपर तुम सम्भल कर जाना!
दूसरा फ़ोटो: देखो तुम कहीं गिर न जाना!!

प्रेषक: किशोरीलाल,
कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज रोड - नई दिल्ली

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3 Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI

# एक समझदारी का फ़ैसला

## देना बैंक

## अल्पवयस्क बचत योजना

- १० वर्ष और अधिक उम्र के बालक खाते खोल सकते हैं
- ५ रुपये से खाते खोल सकते हैं
- ब्याज ३½
- आकर्षक गिल्लक पेटिका मुफ्त दिया जाता है

अधिक जानकारी अपने निकटतम देना बैंक ऑफिस से प्राप्त कीजिए

१५० से अधिक ऑफिस और ४५ सेफ डिपोजिट वॉल्ट

देवकरण नानजी बैंकिंग कं. लिमिटेड